वर्ष 28 | भादवा | सितम्बर-2023 | अंक 9 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982

पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

मूल्य 10/- रुपये

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

मन, वचन, काया से जाने - अनजाने
आपका दिल दुखाया हो तो

मिच्छामी दुक्कडम ॥

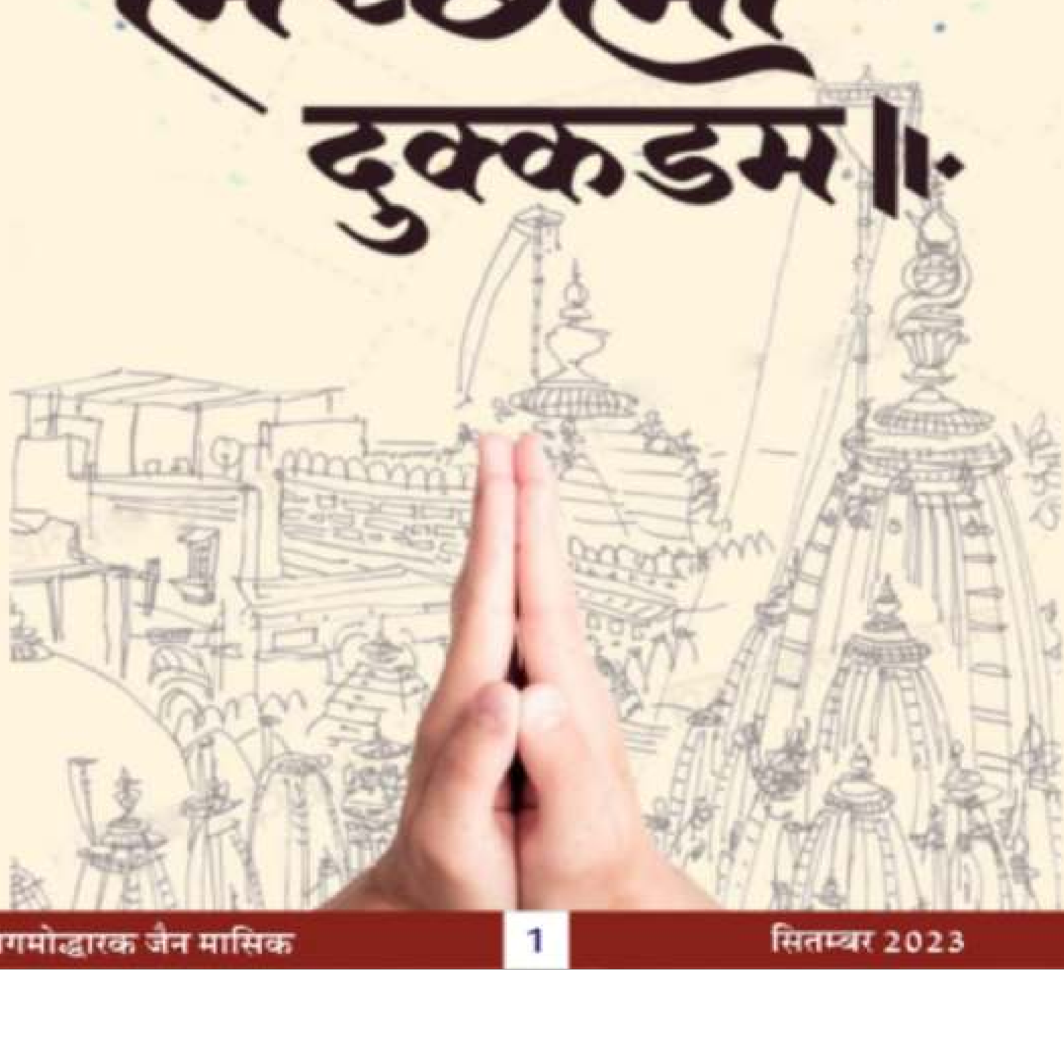

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फ ाउण्डेशन

उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897

1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in

2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन "पप्पू"

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़

इन्दौर-452009 (म.प्र.)

5057087, 5057067

मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

❊ पर्वाधिराज पर्युषण ने जगाई नवचेतना
धर्म के बिना पशु समान है हमारा जीना
जीवन के कण-कण में धर्म बस जाए
वीर प्रभु के चरणों में करते यही प्रार्थना।
❊ ज्ञान का दीप जीवन में जलाना
तपस्या से अपने शरीर को तपाना
धर्म आराधना करना और कराना
ज्ञान-ध्यान में लीन होकर आत्मा को जगाना।

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

परम पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

अणुसासिओ ण कुप्पिज्जा, खंतिं सेविज्ज पंडिए।
खुड्डेहिं सह संसग्गिं हासं कीडं च वज्जए॥

विवेकी पुरुष अनुशासन से कुपित न हों। वे शांति-क्षमाशीलता धारण करें तथा क्षुद्रजनों की संगति न करें, उनके साथ हास्य और क्रीड़ा का वर्जन करें।

- उत्तरा. सूत्र, 1.9

पाथेय ***हे प्रभु ! विनम्र एवं मौन मेरी प्रार्थना उठ रही है तुम्हारी ओर। तुम जो कि बिना तर्क तराशे, बिना गुण दोष विवेचन में किए वह सब कर लेते हो अंगीकार, जो हम तुम्हें करते है निवेदित। तुम जो कि स्वयं अपने को हमें दे देते हो और सबका अपना परिचय करते हो प्रदान। तुम ही यह सम्भव करते हो कि हम तुम्हें जान सकें। तुम जो कि हमें अपना लेते हो बिना शर्त, बिना विचारे कि हम कितने तुच्छ है, अपूर्ण है एवं अशक्त है। तुम- हे मेरे प्रिय स्वामी, मुझे बिछ जाने दो अपने चरणों में घुल जाने दो अपने हृदय में, और अपनी महान सत्ता में, निःशेष हो जाने दो अपने आनन्द में। अथवा बन जाने दो अपना एक नम्र सेवक इस जगत में। मैं और कुछ नहीं चाहता, कुछ ओर नहीं मांगता, केवल होना चाहता हूं, आपका तुच्छ सेवक आपका कुशल तंत्र।***

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-28 भादवा 2023 अंक-9

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय 3

2- विषय सूची 4

3- जीवन की दशा और दिशा बदलने वाला महापर्व - (सम्पादकीय)- डॉ. सुभाष जैन 5

4- सात लाख सूत्र 6

5- 99 अतिचारों का मिच्छामि दुक्कडं क्षमा अमृत रस है-शान्तिलाल सगरावत 7-8

6- क्या आप आसानी से माफ कर पाते है ?, क्षमा 9-10

7- शास्त्रों में जैन धर्म की प्राचीनता...!, कल के दुश्मन सभी, मीत बनते गये- रामेश्वर प्रसाद गुप्ता ''इंदु'' 11

8- महापर्व पर्युषण.... एक जीवंत परिचय श्री बालचंद्र हीराचंद्र दोशी 12

9- अंतिम श्रुत केवली आचार्य श्री भद्रबाहु स्वामीजी, संवत्सरी पर्व की महिमा 13

10-प.पू.साध्वी श्री सौम्यवंदना श्रीजी म. सा. : जीवन परिचय, महाभारत के 9 जीवन सूत्र 14

11-पुण्य नामधन्य निर्मल पूज्य साध्वीवर्या श्री सौम्यवंदना श्रीजी : जीवन झलक 15

12-खतरगच्छ सहस्राब्दी : अलभ्य/दुर्लभ ऐतिहासिक प्रसंग,अलग-अलग जीवों में आत्मा ! 16

13-सहनशीलता, क्षमा और करुणा जीने के तीन सूत्र,सहस्त्राकूट में 1024 कैसे होते हैं ? 17

14-क्षमापना : शाश्वत मूल्य- साध्वी श्री नगीनाजी 18

15-श्री अन्तरिक्षजी तीर्थ का इतिहास.... 19

16-महापर्व पर्युषण 20

17-गलती को माफ करके देखिए.... 21

18-श्री अरिहंत परमात्मा के 12 गुण की बात जानते है....! 22

19-गोचरी, चौबीस तीर्थंकर 23

20-दृष्टि बदले- सृष्टि अपने आप सुन्दर दिखने लगेगी.... 24

21-वर्गपहेली- 340 - जयंतीलाल जैन,रतलाम 25

22-ज्ञान गंगोत्री- 340-आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा. 26

23-शासन-समाचार 27-41

24-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है 42

संपादकीय

जीवन की दशा और और दिशा बदलने वाला महापर्व

भारत के सांस्कृतिक इतिहास में जैनत्व की प्रशस्त परम्परा है। इस परम्परा ने देश में ही नहीं बल्कि भारत की धार्मिक परम्परा में उच्च स्थान ग्रहण कर रखा है, जैन धर्म परम्परा में धार्मिक क्रियाकलाप, तप, जप, साधना को भारत में बड़े सम्मान के साथ देखा जाता है और मान भी दिया जाता है। जैन महापर्व पर्युषण का भारत के धार्मिक पर्वों में एक विशिष्ट स्थान है। महापर्व मानवीकरण का जागरण करता है और लोगों के हृदय में सहज ही सद्भाव और क्षमा का संचार कर देता है। आत्मा के कल्याण के लिये जिस पवित्रता की आवश्यकता होती है वह पवित्रता का भाव पर्व प्रदान करता है। आध्यात्मिक जाग्रति और मन के दुर्भावों को दूर कर आचरण में समरसता की प्रतिष्ठापना महापर्व करता है।

प्रभु श्री महावीर का दिशाबोध मानव मन को छाह और पनाह प्रदान करता है। दर्शन, ज्ञान, चारित्र के निर्मल जल में जीवन में पावनता का सरोज खिल सके, इस बात को ध्यान में रखते हुए हमारे मनीषियों ने महापर्व को धार्मिक आस्था के साथ जीवन के आचरण से जोड़कर उत्कर्ष पर पहुंचाने की व्यवस्था की है, वे यह जानते थे कि साधनों से नहीं साधना से साध्य को पाया जा सकता है। साधन-सुविधा दे सकते है साथ नहीं दे सकते। आचरण की व्यावहारिकता के आधार पर ही हमारी बुराईयों को हम दूर पायेंगे। आचरण में अहिंसा और लक्ष्य में अपरिग्रह के महत्व देकर हम श्रेयस को जीवन में सिद्ध कर सकते हैं। राग, द्वेष रुपी तेल के समाप्त हो जाने पर कर्म का दीप बुझ जाता है कर्म क्षय हो गये तो आत्मा परमात्म बन जाती है। महापर्व में क्षमापना का महत्व इसलिये प्रतिपादित किया गया है। **महापर्व का अर्थ है-आत्म निरीक्षण, आत्मालोचन। महापर्व एक दर्पण है जिसमें हम हमारा प्रतिबिम्ब देख सकते और समझ सकें कि मैं क्या हूं और मुझे कैसा होना चाहिये।** हमें बहुत गहराई से विचार करना होगा कि क्या हम महावीर के प्रतिकूल तो नहीं जी रहे है ?

मनुष्य जन्म को हीरा माना जाता है, हीरे में विकृतियां आ जाये तो उसकी कीमत कोयले के बराबर हो जाती है। हमारा जीवन पथ भ्रान्त न हो जाये, अहं और स्वार्थ के लालच में इसकी कीर्ति पर दाग न लग जाये, भौतिक समृद्धि की तड़क भड़क में हम हमारे हीरे जैसे जीवन को खो न दे इसके लिये सावधानी का संदेश महापर्व से मिलता है। सभ्यता, संस्कृति एवं शालीनता के डूबते हुए उसुलों में महापर्व बचाव का मार्ग है जिस पर चलकर हम धर्म के साथ व्यवहार की गरिमा को बचा सकते हैं। जीवन के सुखचैन को उदासी, क्रोध और बैर विरोध में हम गंवा देंगे ऐसे तो मूर्ख नहीं है ? कई बार दूसरों के सुख और बेवजह की बातों से अपने आपको हम दुःखी कर सुखी होते हुए भी राग, द्वेष पाल लेते है, शायद यह उचित नहीं है। हां ! फूलों के साथ कांटे भी होते है, हमारी नजर किस पर है ? कांटों पर या फूलों पर। -ष्टि का दोष ही जीवन के सुख-दुःख का निर्माण करता है। हम घर-परिवार ही नहीं अपने आसपास के जिस वातावरण में रहते है वह बड़ा खतरनाक है। महिला और पुरुषों में दो बातें विशेष रुप से पाई जाती है। महिलाएं जिद पर अड़ जाती है तो पुरुष क्रोध से बना बनाया काम बिगाड़ लेते है। अगर जिद के समय समझदारी और क्रोध के समय सहनशक्ति का सामंजस्य हम रखें तो वातावरण को खुशनुमा बनाया जा सकता है।

जीवन में जीने के सूत्र धर्म से मिलते है। शास्त्रों में लिखा हुआ केवल वह धर्म नहीं है। किसी के दर्द को सहलाना भी धर्म है किसी के जख्मों पर महरम लगाना भी धर्म है। किसी गरीब के घर में दीप जलाना, प्यासे को पानी पिलाना भी धर्म है। भगवान की पूजन करते-करते अगर हम पत्थर हो गये है तो हमारा पूजा करना व्यर्थ है। बातें हम अच्छी-अच्छी करें पर व्यवहार रुखा हो तो संबंधों में खटास आ जायेगी। **हमें बातों का बादशाह बनना है कि आचरण का आचार्य बनाना है**, यह स्वयं को ही निर्धारित करना होगा। धर्म मंदिर में आकर हमारे दिल में उतरा जाये तो जीवन बदल जायेगा।

संसार को अलौकित करने के लिये सूर्य को जलना पड़ता है, मेघों का निर्माण करने के लिये नदी-सागर अपने को इसलिये सुखा लेते है कि वर्षा से सबको शीतलता प्राप्त हो। तारे पुलकित होकर हमें जीवन चमकाने का संदेश देते हैं तो संसार के जहर को पीकर वृक्ष हमें अमृत वायु प्रदान करते है। परोपकार की इस पुण्य प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में नदियां भी राह में आने वाले पत्थरों की ठोकर खाकर सबको जीवन जल देती है, फूल की चुभन को सहकर भी सौंदर्य और संसार में सुगंध भरने का काम करते है। कर्म का परोपकार ही जीवन का सच्चा समर्पण है। अगर हम ऐसा नहीं करते है तो वह जीवन फिर किस काम का ? जो लोग दिलों के द्वार को खुला रखते है वहां सद्भावना का प्रवेश होता है, हमारे आचरण से यह पता चल जाता है कि हमारे दिल के द्वार खुले है कि नहीं।

धार्मिक आस्था के बल पर जीवन बदलने का संदेश पर्व देते है अगर हमने यह संदेश सुन लिया तो जीवन का रंग-ढंग बदलते देर नहीं लगेगी, जीवन परिवर्तन की यह घटना ही क्षमापना पर्व का सार है। पर यह निश्चित है कि हमारी सोच जिस दिशा का अनुसरण करती है हमारी दशा भी उसके जैसी ही हो जाती है। जीवन की दशा और दिशा बदलने का काम महापर्व करता है।

जीवन की मूल प्रेरणा परमार्थ और आत्म कल्याण है प्रकृति का कण-कण जब इस प्रक्रिया में संलग्न होकर पुण्य की प्रक्रिया को आगे बढ़ा रहा है तो मनुष्य क्यों पीछे रहे ? हम हमारे जीवन के सौदर्य और श्रीवृद्धि को क्यों न बढ़ावे ? यह विचार करने जैसा है। इस बार के क्षमा पर्व पर अगर हमारे जीवन में कोई एक छोटा सा परिवर्तन भी हम कर लेंगे तो यह का क्षमापर्व सार्थक हो जायेगा।

आगमोद्धारक मासिक ने पाठक के हृदय को जीतने का प्रयास किया है, पर हमसे अनेक त्रुटियां हो जाती है न चाहते हुए भी हो जाती है, इसका मुख्य कारण यह है कि अनेक प्रक्रियाओं और लोगों से गुजरते हुए आगमोद्धारक आप तक पहुंचती है। हमारा प्रयास रहता है कि पाठक की सब समस्याओं का समाधान हो फिर भी कुछ कमियां-खामियां रह जाने का हमें भी मलाल रहता है। इस बार के क्षमापर्व पर आगमोद्धारक मासिक परिवार की ओर से हुई त्रुटियों के लिये हम आप सबसे हृदय से मिच्छामि दुक्कड़म् करते हुए क्षमा चाहते है। आगे गलतियां न हो इसका हम प्रयास करेंगे। **- डॉ. सुभाष जैन**

सात लाख सूत्र

सात लाख सूत्र गुजराती भाषा में होने से पीछे से बनाया हो ऐसा लगता है। किस समय में किसी तरह दाखल हुआ हो, उसके संबंध कोई इतिहास प्राप्त होता नहीं परन्तु इसे चालू होने में कम से कम पांच सौ वर्ष तो हुए ही होंगे ऐसा लगता है।

अतुल आत्मलक्ष्मी के अधिकारी अर्हद्-देवों का वो उपदेश है कि सभी जीवों ने आयुष्य तथा सुख प्रिय होने से और वध तथा दुःख अप्रिय होने से किसी की भी हिंसा करनी नहीं चाहिए। हिंसा का परिणाम खराब है। उसका कारण बताते वह कहते हैं कि- मानव अपने सुख के लिए (या दूसरे किसी स्वार्थ के कारण) अन्य जीवों की हिंसा करते है, वहां तक वह अपना वैर भी बढ़ाता है। तात्पर्य यह है कि- हिंसा के आचरण से अनेक जीवों के साथ दुश्मनावट होती है।

जीव-हिंसा का त्याग करने के लिए जीव और अजीव का भेद जानने की जरुर है। इसके साथ जीवों की विविध गतियां और उसका स्वरुप का ज्ञान भी आवश्यक है। श्री दशवैकालिक-सूत्र (अ.4गा.15) में कहा है कि-

''जब सभीजीवों की बहुविध गति को जानते हैं, तब उसके कारणरुप पुण्य को और पाप को तथा बंध को और मोक्ष को जानते हैं।

जीव कितने है ? कहां है ? और उसमें कैसी शक्तियां नजर आती है, आदि बाबतों का विचार जैन सूत्रों में बहुत सूक्ष्म रीत से किया गया है। उनका यह भारपूर्वक कथन है कि मनुष्य, देवता, नारकी और तिर्यंच पंचेन्द्रिय से लेकर वनस्पति, वायु, अग्नि, पानी तथा पृथ्वी सभी में जीव है। वो जीव का उत्पन्न होने का स्थान यानी कि योनिया-84 लाख हैं। उसी तरह से-

''पृथ्वी आदि चार काय के जीवों की सात लाख योनि, प्रत्येक वनस्पतिकाय की दस लाख योनि और तेनाथी इतर वनस्पतिकाय की एटले साधारण वनस्पतिकाय की चौदह लाख योनि होती है। विकलेन्द्रिय एटले बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवों की दो लाख योनि, तिर्यंच-पंचेन्द्रिय की चार लाख योनि, नरक तथा देवों की चार चार लाख योनि और मनुष्य की चौदह लाख योनि होती है। वो सभी का सरवईया करते है तो कुल चौराशी लाख योनि होती है।'' यह गाथाओं का सार प्रस्तुत सूत्र में सरल भाषा में दिया गया है।

84 लाख जीवयोनि में उत्पन्न होते विश्व के सभी जीव के प्रत्ये मैत्रीभाव होना घट सकता है, फिर कोई भी कारणसर उनमें किसी भी जीव की किसी भी प्रकार की हिंसा की हो, कराई हो या उसके प्रत्ये अनुमति दिखाई हो तो इसके लिए मिच्छामि दुक्कडम् देना वो समग्र सूत्र का सार है।

योनि यानी जीव का उत्पन्न होने के स्थानक। वो सभी जीवों का कुल मिलाकर 84 लाख उत्पत्ति स्थानक है। जब के स्थानक उनसे कई गुना ज्यादा है, परन्तु वर्ण, गंध, रस और स्पर्श से जितने स्थानों एक सरीखे हो वो सभी मिल के एक ही स्थानक कहे जाते हैं। उसकी गिनती इस तरह हैः-

पृथ्वीकाय के मूल भेद 350 उसको पांच वर्ण गिनते 1750 होता है। उसको दो गंध से गुनाकर 3500 होता है। उसको पांच रस से गुनाकार 17500 होता है। उसको आठ स्पर्श से गुनाकार करते 140000 होता है। उसको पांच संस्थान से गुनाकार करते सात लाख भेद पृथ्वीकाय के होते है। ऐसे सभी की गिनती करनी है। उपरोक्त 84 लाख जीवयोनि मांहे उत्पन्न हुए कोई भी जीव हाण्यो हो, हाणाव्यो हो या हाणनार की अनुमोदना की हो वो संबंधी मन, वचन और काया से मिच्छामि दुक्कडम् यह सूत्र पढ़ के देना है।

यह सूत्र में बताया है कि 84 लाख जीव योनि संबंधी उल्लेख समवायांगसूत्र (84 समवाय) में तथा श्री अभयदेव सूरी महाराज साहेब ने रचाई उसकी व्याख्या में तथा जीवाजीवाभिगम सूत्र, प्रज्ञापना सूत्र, प्रवचनसारोद्धार आदि में देखने को मिलता है।

सात लाख सूत्रः-

सात लाख पृथ्वीकाय।
सात लाख अप्काय।
सात लाख तेउकाय।
दस लाख प्रत्येक वनस्पति काय।
चौदह लाख साधारण वनस्पति काय।
दो लाख बेइन्द्रिय, दो लाख त्रिंद्रिय
दो लाख चउरिंद्रिय
चार लाख देवता। चार लाख नारकी।
चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय
चौदह लाख मनुष्य

इस तरह चौरासी लाख जीव-योनि में से मेरे जीव ने जो कोई जीव-हिंसा की हो, करायी हो, करते हुए का अनुमोदन किया हो, उन सब का मन-वचन-काया से मिच्छामि दुक्कडं....

सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में:-

99 अतिचारों का मिच्छामि दुककडं क्षमा अमृत रस है

✻ शान्तिलाल सगरावत, मन्दसौर

खमावणया एणं पल्ह्यण भावं जणयह। पल्हायण भावमुवगए य सव्वपाणभूय जीवसत्तेसु मिति भावमुप्पाएइ। मिति भावमुवगए यावी जीवो भावसिसोहिं काऊण गिब्भए भवइ 11-29-18 यह उत्तराध्ययन सूत्र के उन्तीसवें अध्याय में भगवान महावीर फरमाते है।

क्षमापना से जीव को प्रहलाद भाव की प्राप्ति होती है। प्रहलादभाव से सम्पन्न साधक सर्वप्राणों, भूतों, जीवों और सत्वों के प्रति मैत्रीभाव को प्राप्त होता है। मैत्री पात्र को प्राप्त जीव भाव विशुद्ध करके निर्भय हो जाता है।

क्षमाभाव के तीन परिणाम होते है- 1- प्रहलाद भाव, 2- सर्वभूतों के प्रति मैत्रीभाव और निर्भयता।

प्रतिवर्ष सावत्सरी प्रतिक्रमण आषाढ़ी पूर्णिमा के पचास वें दिन को वर्षभर में किये गये दोषों को लेकर क्षमापना करने के महत्वपूर्ण लक्ष्य को लेकर किया जाता है इससे हमारा आत्मावलोकन, आत्म निरीक्षण और आत्मशुद्धि का सर्वाधिक बेहतर अवसर (धार्मिक क्रिया) माना जाता है।

सांवत्सरिक प्रतिक्रमण अतिचारों का सम्मुचय पाठ जिसमें 14 ज्ञान के, 5 समकित के, 60 बारह व्रतों के, 15 कर्मादान के और 5 संलेखना के, इस प्रकार इन 99 अतिचारों में से दिवस संबंधी जो कोई अतिचार दोष लगा हो तो तस्स आलोउं (तस्स मिच्छामि दुक्कड़) कर क्षमायाचना की जाती है। इससे अनन्ताबोधि कषाय सत्ता में भी क्षय होती है, सम्य. दृष्टिप्न सुधरता है और नरक गति नहीं होती है। यह प्रतिक्रमण सच्ची भावना वाला उत्कृष्ट रसायन है।

99 अतिचारों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:-

14 ज्ञानातिचार 2 सूत्र के अतिचार:-

बाइद्धं- अक्षर आगे पीछे बोलना, **वच्चमेलियं-** सूत्रों को मिलाना, **हिणक्खरं-** अक्षर छोड़ना, **अच्चक्खंड-** अक्षर बढ़ाना, **पयहिणं-** पद छोड़ना, **विणयहिपां-**विनय रहित पढ़ना, **जोगहीणं-** योगहीन, **घोषहीणं-**अशुद्ध उच्चारण, **सट्ठदिण्णं-**शक्ति से अधिक पढ़ना, **दुट्ठपडिच्छियं-** दुष्ट भाव से लेना, **अकालेकहो सज्झाओ-** अकाल में स्वाध्याय करना, **सज्झाए न सज्झाइयं-**स्वाध्याय में मन न लगाना, **भाणतां-** वाचना, पृच्छना और धर्मकथा में आशातन, **गुणतां-** परिवर्तना करते आशातना, **विचारतां-** चिंतन आशाहना,

5- समकित के अतिचार-

1-शंका- भगवान के वचनों में शंका करना, **2-कांक्षा-** सम्यग्दर्शन जैसे विशुद्ध बनना, **3-विचिकित्सा-** करणी के फल में संदेह करना, **4- परपाखंड़ी प्रशंसा-** अन्य मत पंक्षियों की प्रशंसा, **5- परपाखंडी परिचय-** मिथ्यात्व दृष्टियों से प्रगाढ़ परिचय रखना।

15 कर्मादान- जो श्रावक जानने और आचरण योग्य नहीं। 1 इंगालकम्मे, 2 वणकम्मे, 3 साडीकम्मे, 4 भाडीकम्मे, 5 फोड़ीकम्मे, 6 दंतवणिज्जे, 7 लक्खावाणिजे, 8 केसवाणिज्ने, 9 रस वाणिज्जे, 10 विसवाणिज्जे, 11 जंतपीलण कम्मे, 12 णिल्लंश्रछणकम्मे, 13 दिवग्गिदावणया, 14 सर दह तलाय सोसाणया और 15 असई-जण पोसणया।

5- संलेखना के अतिचार-

1- इंहलोगा संसप्पओगे- इस लोक सम्बन्धी भोग या सुख की कामना।

2- परलोगासंसप्पओगे- परलोक सम्बन्धी सुख की कामना रखना।

3- जीवियासंसप्पओगे- प्रशस्ति, प्रशंसा, यश, कीर्ति की इच्छा रखना।

4- मरणा संसप्पओगे- तपश्चर्या में कष्टहोने से मृत्यु की कामना।

5- कामभोगासंसप्पओर्ग- इह और परलोक सम्बन्धित शब्द, रुप, रस, गंध तथा स्पर्श भूलकर इन्द्रिय सुखों के भोग की इच्छा करना।

प्रथम तथा द्वितीय अतिचार सामान्य सुख की कामना के और अंतिम अतिचार काम भोगों की तीव्र तमन्ना के हैं।

60 बारह व्रतों के अतिचारं-

1-स्थूल प्राणातिपात विरमण-अहिंसा अणुव्रत, पांच अतिचार, **1- बंधे-** रोष वश बंधन में बांधना, **2-वहे-**क्रूरता पूर्वक पीटना, **3- छविच्छेए-** शरीर पर छेद करना, **4- अहभारे-** अधिक भार लांदना, **5-भक्तपाणविच्छेए-** आहार पानी बंद करना, तस्य मिच्छामि दुक्कडं।

2- स्थूल मृषावाद विरमण-सत्यानुव्रत के पांच अतिचार-

1- सहसाभ्यांख्यान- झूठा कलंक लगाना, **2- रहस्याभाख्यान-**एकांत बात करने वालों पर झूठा आरोप लगाना, **3-स्वदारमंत्र भेद-** स्त्री-पुरुष का मर्म प्रकाशित करना, **4- मृषोपदेश-**झूठा उपदेश देना और **5- कूट लेखाकरण-**झूठ लेख लिखना- तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

3- स्थूल अदत्तादान विरयण-

अस्त्तेय अणुव्रत के पांच अतिचार-

1- स्तेनाहत-चुराई वस्तु ली, **2- तस्कर प्रयोग-** चोर को सहायता की, **3- विरुद्ध राज्यातिकम-** राज्य विरुद्ध कार्य करना, **4- कूटतूला कूटमान-** तोल, माप झूठा किया, **5- तत्प्रति रुपक व्यवहार-** वस्तु में मिलावट की-तस्य मिच्छामि दुक्कडं।

4-मैथुन विरमण-

ब्रह्मचर्य अणुव्रत के पांच अतिचार-

1- इत्वरिक परिग्रहितागमन-अविवाहित महिला को अपना बनाकर गमन करना, **2- अपरिगृहितागमन-**सगाई हुई महिला से गमन, **3-अनंगक्रीड़ा-** कामी अंगों के अलावा अंगों से काम क्रीड़ा करना, **4-परविवाहकरण-**पराये का विवाह और नाता करवाना। **5-कामभोगाति व्राभिलाषा-** काम भोग की तीव्र अभिलाषा करना तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

5- स्थूल परिग्रह परियाण विरमण-

अपरिग्रह अणुव्रत के 5 अतिचार-

1-खेतवत्थुप्पमाणाइकम्मे- क्षेत्र, वस्तु का अतिक्रमण करना, **2- हिरण्णसुवण्णाप्पमाणइकम्मे-** चांदी का अतिक्रमण, **3-घाणधाण्णप्पमाणाइकम्मे-** धान-धान्य का अतिक्रमण, **4- दुप्पयचउप्पयप्प-माणइकम्मे-** दोपद-चौपद का अतिक्रमण और **5- कुवियधातुप्पमाणाइकम्मे-** समस्त धातुओं की मर्यादा का उल्लंघन अतिचार का मिच्छामि दुक्कडं।

6- दिशा परिणाम व्रत- पांच अतिचारः-

1- उर्ध्वदिशाप्रमाणातिक्रम- ऊंची दिशा का, **2- अधःदिशाप्रमाणातिक्रम-** नीची दिशा का, **3- तिर्यंग दिशत्प्रमाणातिक्रम-** तिरछी दिशा का वैरिमाण अतिक्रमण, **4- रिक्तकुडढी-**क्षेत्र बढ़ाया हो और **5- स्मृति भ्रंश-**क्षेत्र परिमापा भूल जाना-तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

7- उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत-

पांच अतिचार-

1- सचित्ताहारे-पच्चक्खाण उपरांत सचित्त आहार लेना, **2- सचित्त पडिबद्धाहारे-**सचित्त प्रतिबद्ध आहार लेना, **3-अप्पउलिओसहि भक्खगया-** अपक्क आहार लेना, **4- तुप्पअलिओसहिभक्खणया-**दुष्पक्व आहार लेना और **5 तुच्छेसहि भक्खणया-**तुच्छ आहार लेना-मिच्छामि दुक्कडं।

8- अर्थदण्ड विरमण व्रत-

पांच अतिचार-

1- कंदर्य-काम विकारी कथा करना, **2- कौकुच्य-** भंड कुचेष्ठा करना, **3- मौखार्य-**वाचालता, **4- संयुक्ताधिकार-**हिंसक वस्तुएं रखना और उपभोग **परिभोगातिरिक्त-** उपभोग परिभोग बढ़ाना।

9- सामायिक व्रत-

पांच अतिचार-

1- मनदुप्पणिहाणे, 2- वय दुप्पहियाणे, 3- काय दुप्पहियाणें-मन, वचन, काया को सामयिक में एकाग्र नहीं रखना, 4- सामायिक की स्मृति न रखना, 5- सामायिक में अनवस्थित चित्त रखना-तस्सम मिच्छामि दुक्कडं।

10-देशावासिक व्रत-

1- आनयन प्रयोग-सीमा बाहर से वस्तु मंगवाना, 2- प्रेष्यप्रयोग-भिजवाई हो, 3- शब्दानुपात-शब्दों से चेताना, 4-रुपानुपात-रुप दिखाना, 5-ब्राह्यपुद्‌गलप्रक्षेय- कंकर फैंकक र बुलाना।

11-पौषध व्रत-

1- अप्रतिलेखित, दुष्प्रतिलेखित शय्यासंतारक, 2- अप्रमार्नित दुष्प्रमार्जित शय्या संस्तारक- शय्या संस्तारक का प्रतिलेख याने देखना और प्रमार्जन याने रजोहरण से हटाना, 3-अप्रतिलेखित दुष्प्रतिलेखित उच्चार प्रसवणभूमि-मूत्रस्थान प्रतिलेखन न करना 4- अप्रमार्जित दुष्प्रमार्जित उच्चार प्रसवण भूमि-प्रमार्जित न करना, 5-पौषधोपवास समननुपालन-पौषध पालन न किया हो

12-अतिथि संविभाग व्रत-

1-सचित्रा निक्षेपण, 2-सूचित्तविधान, 3- कालातिक्रम, 4- परोपदेश और 5- मात्सर्य। उचित वस्तु सचित्त पर रखना, उससे ढंकना। भिक्षा समय को टालना, दूसरों से दान दिलवाना, इर्ष्या भाव से दान देना-तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

क्या आप आसानी से माफ कर पाते हैं ?

✻ क्या आप आसानी से माफ कर पाते हैं ?

क्या आप आसानी से माफ कर पाते है ? शायद आपका दिल बहुत बड़ा हो और आप आसानी से माफ कर देते हैं लेकिन खुद से एक सवाल करिएगा कि क्या आप आसानी से भूल पाते हैं ?

✻ माफ करना होता है बहुत मुश्किल....

कई बार माफ करना आसान होता है लेकिन भूल जाना बहुत मुश्किल हो जाता है। ये एक लिहाज से सही भी है क्योंकि माफ करने से सामनेवाले को कुछ भला नहीं होता बल्कि हमारा ही चित्त शांत रहता है। हमारे दिल में जो पीड़ा होती है वो खत्म हो जाती है लेकिन अगर आप माफ करने के बाद भूल जाते है और उस घटना से सबक नहीं लेते है तो यह एक बड़ी गलती हो सकती है क्यों सामनेवाले की गलती को भूलकर सबक ना लेने का अर्थ है आप उसको मौका देते हैं कि वो फिर आपके साथ वहीं करें।

✻ बेहद कॉमन सवाल....

ये सवाल इतना कॉमन है कि हर इंसार के ज बन में कभी ना कभी जरुर आता है क्योंकि ये दुनिया इतनी सीधी तो नहीं कि किसी के साथ कभी धोखा ना हो, या किसी को किसी ने कभी हर्ट ना किया हो। तो अगर आपके दिमाग में भी ये ख्याल आता है कि माफ कैसे करुं तो आज का ये लेख आपकी कुछ हद तक मदद कर सकता है। कुछ हद तक मदद इसलिये क्योंकि हर मनुष्य का माइंड सेट अलग होता है। सिर्फ माइंड सेट ही नहीं बल्कि परिस्थितियां भी अलग होती है। किसी एक का अनुभव दूसरे पर भी फिट बैठे ये नहीं हो सकता है। इसलिए मैं कह रही हूं कि कुछ हद तक ही आपको इस लेख से मदद मिल सकती है।

✻ सबसे बड़ी परेशानी....

दरअसल मैं वृश्चिक राशि की हूं ,ज्योतिष में उतना यकीन नहीं है लेकिन राशि के बारे में मैं आपको इसलिए बता रही हूं क्योंकि बड़े-बड़े एस्ट्रोलॉजर जो वृश्चिक राशि के व्यक्तिगत के बारे में बताते हैं तो सब मुझ पर फिट बैठता है। सिर्फ वृश्चिक राशि से ही बल्कि अंकशास्त्र के 6 नंबरवाले गुण भी मुझ पर ठीक वैसे ही फिट बैठते है जैसे राशि वाले। तो दोनों से ही एक सबसे बड़ी परेशानी मेरे व्यक्तित्व में भी वो थी माफ ना कर पाना।

✻ माफ ना कर पाने का दुःख:-

बचपन से ही मैं बहुत परेशान रहती थी इस भावना से। जल्दी किसी से नाराज नहीं होती थी लेकिन जिसने कर दिया उसे माफ कर पाना नामुमकिन होता था। अंकशास्त्र और ज्योतिषशास्त्र दोनों की नजर से अगर देखूं तो ये एक कॉमन चीज थी जो मेरे जैसे लोगों की पर्सनैलिटी का हिस्सा होता है। ये मेरे व्यक्तित्व का सबसे कमजोर पहलू था क्योंकि आपकी आत्मा की स्वच्छता के लिए माफ करना बहुत जरुरी है।

✻ ये बात मुझे तब पता लगी जब 2016 में मैंने शिवानी का इंटरव्यू लिया। इंटरव्यू के बाद हम बातचीत कर रहे थे कि मैंने उनसे पूछ लिया कि- दीदी मैं माफ नहीं कर पाती, इसकी क्या वजह हो सकती है क्योंकि इससे अब मुझे ही परेशानी होने लगी है।

✻ बीके शिवानी का जवाब....

बीके शिवानी ने सौम्यता के साथ जवाब दिया कि ये आपकी आत्मा के साथ इस जन्म में भी आया है। ये ना जाने कितने जन्मों से आपके साथ चलता आया है और अगर इस जन्म में भी आप माफ करना सीखेंगी नहीं तो ये भावना अगले जन्म में भी आपके साथ जाएगी। मैं हैरान थी क्योंकि वाकई ये भावना बचपन से मेरे अंदर थी, खैर उनकी बातें सुनी और कोशिश जारी रखी कि माफ करना सीखूं।

✻ साल 2022 में जया किशोरी से मुलाकात....

समय बीतता गया और आया 2022, इस वक्त तक मैंने कुछ हद तक माफ करना सीख लिया था लेकिन पूरी तरह से वो मेरे स्वभाव का हिस्सा नहीं बना था फिर भी मैं मिली जया किशोरीजी से जिनसे मैंने इंटरव्यू में ही सवाल किया कि- अगर कोई आसानी से माफ नहीं कर पाता हो तो वो क्या करें। तब जयाजी ने बताया कि- इला जी, माफ करना बहुत जरुरी है लेकिन माफ करने से ज्यादा भूल जाना जरुरी है लेकिन माफ करने, भूल जाने के बाद रुकना नहीं है, उस घटना से सबक लेना है ताकि कोई हमारे साथ फिर वहीं ना करें जो उसने पहले किया। सबक लेने से आप खुद को प्रोटेक्ट करते हैं, ऐसे लोगों से जो बार-बार जानबूझकर या अनजाने में आपको हर्ट कर देते हैं।

✽ जया किशोरी की राय....

जया किशोरीजी की ये मैंने फौरन कनेक्ट कर लिया क्योंकि माफ करना अगर आपने सीख लिया तो ये काफी नहीं होगा। जब आप सबके नहीं, ----- रहेंगे कि वो आएं और बारबार आपको हर्ट करें।

✽ क्या कहते हैं आचार्य प्रशांत ?

इस मामले में वेदांत टीचर आचार्य प्रशांत की राय अलग है। वो कहते है कि- आप आकाश बन जाओ क्योंकि अगर कोई आकाश पर थूकता है तो उसी पर आकर गिरती है। तो ऐसे बन जाओ कि कोई आपको हर्ट करें भी तो आप पर फर्क ही ना पड़े। मैं उनकी बात से भी रिलेट करती हूं लेकिन आकाश बनने के लिए सबसे पहले आपका चित्त शांत होना बहुत जरुरी है और ये होगा अध्यात्मिक दृष्टिकोण आने के बाद। जो हर इंसान के लिये मुमकिन नहीं है।

✽ एक आध्यात्मिक व्यक्ति की नजर से देखो....

आचार्य प्रशांत ये भी कहते है कि- जिंदगीभर आम इंसान की तरह जीना है तो जिओ लेकिन अगर आप चाहते हो कि आपकी चेतना का स्तर उठे तो कुछ अलग तो बनना पड़ेगा और उसके लिये कठिन तपस्या करनी पड़ेगी जिसकी राह अध्यात्म से होकर जाती है। क्योंकि जिस दिन आपने खुद को जान लिया उस दिन आपको दुनियावी चीजों से मतलब नहीं रहेगा और पीड़ा, क्रोध, जलन, रोना, पछताना, बदला लेना ये सब माया है और माया से अलग होकर ही जीव का अस्तित्व हैं।

✽ आपको क्या लगता है ?

तो आखिर में आप सभी पर मैं छोड़ना चाहूंगी कि आपको माफ करके खुद की आत्मा को शांत रखना है या फिर माफ करके जन्मों-जन्मों तक इस भावना को अपने साथ रखना है या फिर माफ कर, भूल जाने की आदत अपनाकर फिर किसी को आमंत्रित करना है कि वो आपको हर्ट करें या फिर जो आचार्य प्रशांत के मुताबिक आकाश बन जाना है कि इस संसार की माया से आपको फर्क ही ना पड़े ? आप मुझे अपना जवाब बताएं।

मनुष्य जीवन को सफल बनाने के लिये क्षमाशील अवश्य बने।

क्षमा

क्षमा सभी से मांगना सब पर मम समभाव।
मुझे क्षमा कर दें आप सवंत्सरी पर्व प्रभाव।।

सद् गुरु सब को बांटते प्रवचन की जागीर।
अज्ञानी महापर्व पर फिर रहा रंक फकीर।।

दान शील तप भावना धर्म है चार प्रकार।
पर्युषण में भवितजन भरिये पुण्य भण्डार।।

विश्वमैत्री पर्व है संवत्सरी पर्व महान।
करेगा विश्व कल्याण होगा सर्वोदय जान।।

अभिनंदन है पर्व पर। हे पर्युषण सार।
मलिन मानसों में भी भर देना फिर भाव उदार ।।

क्षमा भाव समता बिना धर्म क्रिया बेकार।
क्षमा भाव ही जानिये जैन धर्म का सार ।।

चण्डकौशिक ने सुन प्रभु वीर का पैगाम।
क्षमाभाव को धारण कर पाया मोक्ष धाम ।।

सवंत्सरी की शुभ घड़ी में बरसे धर्म का नीर।
अज्ञानी प्यासा मरे यह उसकी तकदीर ।।

क्षमाभाव से पहचानिये निर्मल आत्म स्वरुप।
क्षमाभाव हृदय उतारिये जैसे उदयन महीप ।।

कल्पवृक्ष है यह पर्व चिंतित को है फल है सतार।
पर्युषण भवोभव के रोग का है पक्का उपचार ।।

सुस्वागत है पर्व वट का आत्म जगत सम्राट।
दिखला रहा संसार को अपना रुप विराट ।।

आया है भव जीवन तारने पर्युषण जलपान।
हे आत्मन् चुक न जाना आगम का आवहात् ।।
पर्व-
सब धर्मो में श्रेष्ट धर्म है पर्युषण पर्व यह प्यारा ।
देखो कैसी धूम मची है, है बरसे अमृत धारा ।।

शास्त्रों में जैन धर्म की प्राचीनता...!

1- शिवपुराण में लिखा हैः-

अष्टषष्ठिसु तीर्थेषु यात्रायां यत्फलं भवेत्।
श्री आदिनाथ देवस्य स्मरणेनापि तदभवेत् ॥

अर्थ- अड़सठ (68) तीर्थो की यात्रा करने का जो फल होता है, उतना फल मात्र तीर्थकर श्रीआदिनाथ के स्मरण करने से होता है।

2- महाभारत में कहा हैः-

युगे युगे महापुण्यं दृश्यते द्वारिकापुरी,
अवतीर्णो हरिर्यत्र प्रभासशशि भूषणः।
रेवतादि जिनो नेमिर्युगादि विमलाचले,
ऋषिणामा श्रमादेव मुक्ति मार्गस्य कारणम् ॥

अर्थ- युग-युग में द्वारिकापुरी महाक्षेत्र है, जिसमें हरिका अवतार हुआ है। जो प्रभास क्षेत्र में चन्द्रमा की तरह शोभित है और गिरनार पर्वत पर नेमिनाथ और कैलास (अष्टापद) पर्वत पर आदिनाथ हुए हैं। यह क्षेत्र ऋषियों का आश्रय होने से मुक्तिमार्ग का कारण है।

3- महाभारत में कहा हैः-

आरोहस्व रथं पार्थ गांढीवं करे कुरु ।
निर्जिता मेदिनी मन्ये निग्रर्था यदि सन्मुखे ॥

अर्थः- हे अर्जुन ! रथ पर सवार हो और गांडीव धनुष हाथ में ले, मैं जानता हूं कि जिसके सन्मुख निर्ग्रन्थ मुनि आ रहे है उसकी जीत निश्चित है।

4- ऋग्वेद में कहा हैः-

ॐ त्रैलोक्य प्रतिष्ठितानां चतुर्विंशति तीर्थकराणाम्।
ऋषभादिवर्द्धमानान्तानां सिद्धाना शरणं प्रपद्ये।

अर्थ- तीन लोक में प्रतिष्ठित आदि श्री ऋषभदेव से लेकर श्री वर्द्धमान स्वामी तक चौबीस तीर्थकर हैं। उन सिद्धों की शरण को प्राप्त होता हूं।

5- ऋग्वेद में कहा हैः-

ॐ सुधीरं दिग्वाससं ब्रह्मगर्भ सनातनं उपैमि वीरं।
पुरुषमर्हतमादित्य वर्ण तसमः पुस्तात् स्वाहा ॥

अर्थ- मैं धीर वीर ब्रह्मरुप सनातन अर्हत आदित्यवर्ण पुरुष की शरण को प्राप्त होता हूं।

6- यजुर्वेद में कहा हैः-

ॐनमोऽर्हन्तो ऋषभो।

अर्थ- अर्हन्त नाम वाले पूज्य ऋषभदेव को प्रणाम हो।

7- दक्षिणामूर्ति सहस्रनाम ग्रंथ में लिखा हैः-

शिव उवाच।

जैन मार्गरतो जैनों जितक्रोधो जितामयः।

अर्थ- शिवजी बोले, जैन मार्ग में रति करने वाला जैनी क्रोध को जीतने वाला और रोगों को जीतनेवाला है।

8- नगर पुराण में कहा हैः-

दशभिर्भोजतैर्विप्रैः यत्फल जायते कृते।
मुनेरहत्सुभक्तस्य तत्फल जायते कलौ ॥

अर्थ- सत्युग में दस ब्राह्मणों को भोजन देने से जो फल होता है। उतना ही फल कलियुग में अहन्त भक्त एक मुनि को भोजन देने से होता है।

9- भागवत के पांचवें स्कन्ध के अध्याय 2 से 6 तक ऋषभदेव का कथन है जिसका भावार्थ यह है कि चौदह मनुओं में से पहले मनु स्वयंभू के पौत्र नाभि के पुत्र ऋषभदेव हुए जो जैनधर्म के प्रचारक थे, ऋग्वेद में भगवान् ऋषभदेव का 141 ऋचाओं में स्तुति परम वर्णन किया है।

ऐसे अनेक ग्रंथों में अनेक दृष्टान्त हैं॥

कल के दुश्मन सभी, मीत बनते गये।

✲ रामेश्वर प्रसाद गुप्ता ''इंदु''

आप चुपके हमारे, जो बनते गये।
भावना भाव लिख, गीत बनते गये॥
चाह मन की बढ़ी, चाह पाते रहे।
नेह झोली पथिक, पर लुटाते रहे॥
प्रेम की एक पारस मणी छू गई-
कल के दुश्मन सभी, मीत बनते गये।
आप चुपके हमारे, जो बनते गये॥
सत्य आया समझ, द्वंद्व मन का मिटा।
भार में था हृदय, स्वतः मद से हटा॥
कर्म अधिकार अपने दिखाने लगे-
मन थके हारे, तन, जीत बनते गये।
आप चुपके हमारे, जो बनते गये॥
प्रेरणा हो तुम्हीं, और प्रेरक भी तुम।
रच गई एक रचना, हुए दूर भ्रम।
तान छेड़े पवन, थाप नदिया भरे॥
झूम डाली सुमन, रीत बनते गये।
आप चुपके हमारे, जो बनते गये॥

महापर्व पर्युषण....

पर्युषण महापर्व एक ऐसा पावनकारी पर्व है, जिसके आगमन से मानव की सुप्त शक्तियां जाग्रत बन जाती है। वर्षभर कुछ भी न करने वाले भी इस पर्व की प्रेरणा से पावनकारी बनते हैं। जैनों का एक भी ऐसा घर न होगा, जो इस पर्व के पदार्पण से नवपल्लवित ना बना हो। पर्वाधिराज पर्युषण आत्मा को उस पार पहुंचाने वाला पर्व है। इस पर्व की सुन्दरतम किरणों आत्मा के अज्ञान के अंधकार को दूर कर ज्ञान का उजाला हमारे जीवन में फैलाती है। विनय बिना विद्या सुगंध बिना पुष्प की शोभा नहीं होती, वैसे ही पर्युषण पर्व की सुंदरतम साधना आराधना उल्लास के बिना नहीं होती। पाप की पूंजी को नष्ट करने के लिये इस पर्व को हमें आराधना करनी चाहिए।

पर्वाधिराज के पदार्पण से शुभ भावों का हमारे मन में संचार होता है। अनंतकाल के भूलों को सुधारने, गुणों की वृद्धि करने और बुराई को समाप्त करने के लिए यह मंगल पवित्र पर्व अपने आंगन में आया है। जिस प्रकार पूनम और अमावस्या के दिन दरिया में जोरों का ज्वार आता है, अन्य दिन में इतना नहीं आता, वैसे ही इन दिनों में तप, त्याग में अधिक उत्साह आता है। इसलिए इन दिनों की महत्ता अधिक होती है। भगवान ने इस पर्व की महिमा बताते हुए कहा है- जैसे मंत्रों में परमेष्टी मंत्र, दान में अभयदान, व्रत में ब्रह्मचर्य, गुण में विनय श्रेष्ठ है, वैसे ही सभी पर्वो में पर्युषण सबसे श्रेष्ठ है। पर्युषण सब पर्वो का राजा हैं।

पर्युषण पर्व हमें आत्मा की स्मृति कराने के लिए आए हैं। यह कहते हैं कि- ''हे! जीव आत्मा के सम्मुख हुए बिना धर्म साधना का सच्चा आनंद, अनुभव नहीं हो सकता। क्योंकि धर्म साधना आत्मा के सम्मुख होने के लिए ही है। यदि आत्मा का लक्ष्य विकसित किए बिना जीवन का अंत आ जाएगा तो हम परलोक में क्या लेकर जाएंगे ?

इन दिनों में सामान्य दिनों के मुकाबले दान, शील, तप, भाव की विविध आराधना जोर-शोर से होती है। यह जोरदार आराधना मोहनगरी पर लगातार आक्रमण रुप बनाती हैं। जिस प्रकार दो राजाओं के बीच में युद्ध हो। एक राजा के पास बड़ी सेना, शस्त्र हो और दूसरे राजा के पास सेना और शस्त्र कम हो। अगर बड़े राजा की सेना अगर लगातार हमला करती रहे तो छोटे राजा की सेना हार मान लेती है और अपना समर्पण कर देती हैं। यहां विशेषता छोटे या बड़े कि नहीं लेकिन जिसकी धार लगातार जोरदार है, विजय उसी की होती है। इसी प्रकार पर्युषण महापर्व में मोह राजा के पर दान, शील, तप, भाव की आराधना का लगातार, जोरदार हमला होता है, जिससे वह मोह राजा हार जाता है। प्रसारित करता है। इस पर्व की आराधना हमें अंतरमन के आंगन में क्षमा के अशोक पल्लव बांधकर, आराधना की विविध रंगोली सजाकर, तप त्याग का दीपक जलाएं जिससे आत्मा के कोने-कोने में जगमग प्रकाश खुल फैल जाए।

एक जीवंत परिचय
श्री बालचंद्र हीराचंद्र दोशी

श्री बालचंद्र हीराचंद्र दोशी को कितने व्यक्ति पहचानते है, कई जैनियों ने तो नाम भी पहली बार सुना होगा ? गुजरात के बाडनेर के जैन परिवार में 23 नवंबर 1882 में जन्म लेनेवाले बालचंद्रभाई व्यवसायिक जीवन को आरंभ करने के लिये मुंबई आये, इनके भागीदार (श्री धर्मसिंह महाराज) खाटु और तुलसीदास किलचंद्र के साथ मिलकर हिन्दुस्थान एयरक्राफं नाम की कंपनी की स्थापना की और भारत का पहला फाईटर प्लेन बनाया। दूसरे विश्वयुद्ध के समय पहला आर्डर चीन की ओर से मिला जो कुछ ही समय में पूरा कर दिया गया।

इसके बाद भारत आजाद हुआ तो भारत सरकार ने इनकी कम्पनी को अपने अधिकार में ले लिया। आज भारत सरकार के मालिकाना हक की यह कम्पनी हिन्दुस्थान ऐरोनाटिक्स के नाम से जानी जाती है।

भारत का पहला फायटर प्लेन बनाने श्री बालचंद्र के सम्मान में क्या हमारा सिर गर्व से ऊंचा नहीं हो जाता है ?

✻ पर्युषण लाया है गुलशन में बहार
स्वाध्याय का चिंतन करें हम बार-बार
सबको खमाकर करें हम माफ
जैन धर्म का यही है सार।

अंतिम श्रुत केवली आचार्य श्री भद्रबाहु स्वामीजी

आज हम जिनकी बात करना चाह रहे है, वो महान आत्मा, श्री उवसंग्गहरम् स्त्रोत्र के रचयिता और कल्प सूत्र (मूल सूत्र) के भी रचयिता है।

विनय और अहंकार, विरोधी तत्व है। एक आध्यात्मिक उन्नति का कारण बनता है तो दूसरा पतन का।

आचार्य श्री भद्रबाहु स्वामीजी का जन्म दक्षिण भारत में आया हुआ प्रतिष्ठानपुर नगर में हुआ था। उनकी जाति ब्राह्मण थी। उनका प्राचीन गोत्र था। श्री भद्रबाहु और वराहमिहिर दोनों भाई थे। दोनों भाईओं ने श्री यशोभद्रसूरि के पास दीक्षा ली थी। दोनों भाई संस्कृत के प्रखर विद्वान और वेदनिष्णात थे। दोनों ज्योतिष विद्या में पारंगत थे।

एक बार श्रीयशोभद्रसूरिजी से परिचय हुआ। दोनों ने उनके पास दीक्षा ली। छोटे से समय शास्त्र अभ्यास और धार्मिक क्रिया में कुशलता प्राप्त की। गुरुजी ने योग्यता देख कर भद्रबाहु स्वामीजी को आचार्य पद दिया। श्री यशोभद्रसूरि ने आचार्य भद्रबाहु स्वामीजी को कहा था कि- वराहमिहिर को आचार्य पद नहीं देना।

वराहमिहिर ने देखा कि- अब आचार्य पद नहीं मिलेगा तो उन्होंने जैन दीक्षा छोड़ दी। राजा ने आचार्य श्रीभद्रबाहु स्वामीजी का उपदेश से प्रतिबोध पाकर जैन धर्म स्वीकारा। वराहमिहिर को जैनाचार्य और संघ पर द्वेष था। शोक में मृत्यु पाकर व्यंतर देव हुआ।

उन्होंने जैन संघ में मरकी का उपद्रव किया। आचार्य भद्रबाहु स्वामीजी को पता चला तो उन्होंने श्री संघ के उपद्रव निवारण के लिये उवसग्गहरं स्तोत्र की रचना की। यह स्तोत्र गिनके उसका पानी छाटने से रोग की शांति हुई। उपद्रव शांत हुआ। इस स्तोत्र में श्रीपार्श्वनाथ प्रभु की स्तुति है।

आचार्य श्रीभद्रबाहु स्वामीजी ने 10 नियुक्ति, 4 छेदसूत्र आदि ग्रंथों की रचना की। उन्होंने 12 वर्ष नेपाल में महाप्राण ध्यान किया था। उन्होंने 45 वर्ष की आयु में दीक्षा ली थी। 62 वर्ष में युगप्रधान पद और 76 वर्ष का आयु पूर्ण करके वीर संवत 170 में कालधर्म हुआ। श्रीमहावीर स्वामी की 7 वीं पाट पर आचार्य श्री भद्रबाहु स्वामीजी हुए।

अंतिम श्रुत केवली (चौदह पूर्वधर) श्री भद्रबाहु स्वामीजी नेपाल में ''महाप्राण'' की ''साधना'' कर रहे थे। महाप्राण की साधना करने से ''चौदह पूर्वों'' का पुनरावर्तन करने की शक्ति एक मुहूर्त में आ जाती है (एक ज्ञानी को भी अपने जान की ''संभाल'' रखने के लिए पुनरावर्तन की आवश्यकता होती है-ये इसका प्रमाण है। भयंकर दुष्काल के कारण काफी श्रुतज्ञान अव्यवस्थित हो चुका था। इसलिये वीर निर्वाण के 160 वर्ष पर पाटलिपुत्र (पटना) में श्री स्थूलिभदज्री के नेतृत्व में एक महासम्मेलन हुआ। सभी ने मिलकर 11 अंगों का पूर्णतः संकलन किया। ''दृष्टिवाद'' जैन आगमों का बहुत महत्वपूर्ण भाग है और इसका संकलन किये बिना 11 अंगों की वाचना अधूरी थी। उस समय ''दृष्टिवाद'' के एकमात्र ज्ञाता थे-श्री भद्रबाहु स्वामीजी। संघ ने कुछ श्रमणों को उनके पास भेजा। आयुष्य में कमी और ''महाप्राण साधना'' में लीन होने के कारण उन्होंने आने में असमर्थता प्रकट की और साथ में किसी को वाचना देने में भी अपनी अस्वीकृति दी। संघ ने उन्हीं से पूछा- भगवन- ''संघ'' की अवज्ञा का क्या दंड आता है ? भद्रबाहु स्वामी ने कहा- वो संघ से बहिष्कृत करने योग्य है !

संवत्सरी पर्व की महिमा

संवत्सरी पर्व की महिमा है अपरंपार
ले जाती है वह हमें मुक्ति के द्वार
ध्येय है संवत्सरी का क्षमा का आदान प्रदान करना
स्नेह और प्रेम का बहता रहे जीवन रुपी झरना
कलह कषायों को हमें दिल से है मिटाना
क्षमा के दिव्य प्रकाश से आत्मा को आलोकित है करना
जाने अनजाने में हुई भूलों को हमें याद है रखना
प्रायश्चित लेकर उन गलतियों को कभी ना दोहराना
याद कीजिये आज चंदनबाला मृगावती को
क्षमा से ही तो पाया था उन्होंने केवल ज्ञान को
आत्मा से अज्ञान के अंधकार को है मिटाना
ज्ञान रुपी प्रकाश जीवन भर फैलाना
संवत्सरी पर्व पर करते हैं सब को खमत खामना
मोक्ष महल ही मिले सबको यही है मंगल भावना।

प.पू.साध्वी श्री सौम्यवंदना श्रीजी म.सा. : जीवन परिचय

भारत वर्ष अध्यात्मिक संस्कृति की केन्द्र भूमि है। यहां अनेक विरल आत्माएं जन्म लेती है जिनका व्यक्तित्व मानव मन को ताजगी से भर देता है। मालवा के इन्दौर जिले के देपालपुर नगर में श्रेष्ठिवर्य श्रीबाबुलालजी मगनलालजी मण्डोवरा के यहां सौ.कां.माणकदेवी की रत्नकुक्षी से महासुदी-11, विक्रम सं. 2016 को जन्मी बालिका संतोष जो बाल्यकाल से ही विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न थी। धर्माराधना में अनुरक्त परिवार के संस्कारों का बीजारोपण सुबालिका संतोष के जीवन में हुआ। पूर्व में दादा म.सा. श्री चतुरश्रीजी म.सा. भुआ म.सा. श्री इन्दुश्रीजी म.सा. दो बड़ी बहनें प.पू.श्री हेमेन्द्रश्रीजी म.सा., प.पू.श्री सौम्ययशा श्रीजी म.सा. के पथ का अनुसरण करते हुए वडिल भगिनी प.पू.सा. सौम्ययशाश्रीजी म.सा. का गुरुत्व प्राप्त कर 13 वर्ष की आयु में जेठ सुदी 4 विक्रम संवत 2030 को आचार्य देव प.पू.श्री हेमसागरसूरिजी म.सा.के कर कमलों से तीर्थाधिराज श्री सिद्धाचल तीर्थ में दीक्षा अंगीकार की ब नाम सौम्यवंदना श्रीजी प्राप्त किया। बाल्यवय में ही अपनी कठोर साधना, वैयावच्च गुण द्वारा यह सिद्ध कर दिखाया कि -धर्म पचपन में ही नहीं बचपन में भी संभव है। प.पू.भूआ एवं दोनों बड़ी बहनों के चरणों में उनकी प्रतिभा कोहिनूर की भांति चमकती गई।

आपका तत्व चिंतक व्यापक और उदार है। परमात्मा श्री पार्श्वनाथ की आराधना (इष्ट) ने माँ पद्मावती से साक्षात्कार करवाया। आप दिन दुखियों की बेली है। आपकी दरीया दिल भावना से अनेक भक्त आपको माँ के रु प में स्वीकारते है। जावरा तहसील के रिंगनोद नगर में, आपको आये स्वप्न दृष्टा से बना **''पार्श्व पद्मावती पावन धाम''** आज श्रद्धा भक्ति का केन्द्र बना है। आप सरल मना वात्सल्य वारिधी है। आपका सबके प्रति एक जैसा व्यवहार सबको आपकी ओर आकर्षित करता है। जैन-अजैन सभी आपके भक्त है। ***''आप यथा नाम तथा गुणा''*** के धारक है।

आपकी तीन शिष्या एक प्रशिष्या है। प.पू.रजिताश्रीजी म.सा., निर्मिताश्रीजी म.सा., संयमवंदनाश्रीजी म.सा., प्रशिष्या परम्वंदनाश्रीजी म.सा एवं आपके बाद आपकी छोटी बहन प.पू.श्री अर्पिताश्रीजी म.सा. ने दीक्षा अंगीकार की। आपके परिवार से 23 दीक्षा हुई है। शत-शत नमन ऐसे मण्डोवरा परिवार को !

वंदन करते इंद्र भी चरित्र के इस वेश को,
सूरज भी निस्तेज है चारित्र के इसे तेज से,
मुक्तिभरा ये रामपथ प्रभु वीर का उपदेश है,
ऐसे महावीर के वेश को करुं भाव से मैं वदना !!

महाभारत के 9 जीवन सूत्र....

1- संतानों की गलत मांग और हठ पर समय रहते अंकुश नहीं लगाया गया, तो अंत में आप असहाय हो जायेंगे। - कौरव

2- आप भले ही कितने बलवान हो लेकिन अधर्म के साथ हो तो, आपकी विद्या, अस्त्र-शस्त्र शक्ति और वरदान सब निष्फल हो जायेगा। - कर्ण

3- संतानों को इतना महत्वाकांक्षी मत बना दो कि विद्या का दुरुपयोग कर स्वयंनाश कर सर्वनाश को आमंत्रित करें। - अश्वत्थामा

4- कभी किसी को ऐसा वचन मत दो कि आपको अधार्मिकों के आगे समर्पण करना पड़े। -भीष्म पितामह

5- संपत्ति, शक्ति व सत्ता का दुरुपयोग और दुराचारियों का साथ अंत में स्वयंनाश का दर्शन कराता है। - दुर्योधन

6- अंध व्यक्ति-अर्थात् मुद्रा, मदिरा, अज्ञान, मोह और काम (मृदुला) अंध व्यक्ति के हाथ में सत्ता भी विनाश की ओर ले जाती है। - धृतराष्ट्र

7- यदि व्यक्ति के पास विद्या, विवेक से बंधी हो तो विजय अवश्य मिलती है। - अर्जुन

8- हर कार्य में छल, कपट व प्रपंच रच कर आप हमेशा सफल नहीं हो सकते। - शकुनि

9- यदि आप नीति, धर्म व कर्म का सफलतापूर्वक पालन करेंगे, तो विश्व की कोई भी शक्ति आपको पराजित नहीं कर सकते। - युधिष्ठिर

यदि इन नौ सूत्रों से सबक लेना सम्भव नहीं होता है तो जीवन में महाभारत संभव हो जाता है।

पुण्य नामधन्य निर्मल पूज्य साध्वीवर्या श्री सौम्यवंदना श्रीजी : जीवन झलक

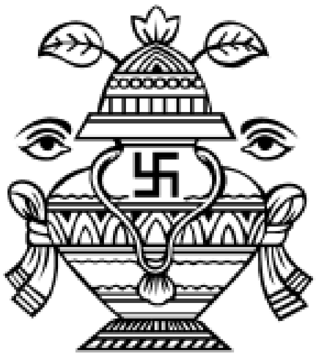

नाम	- सौम्यवंदना श्रीजी म.सा.
जन्म दिवस	- 30-1-1960
माताश्री	- श्रीमती माणकदेवी
पिताश्री	- बाबुलालजी मण्डोवरा
भाईश्री	- अमृतभाई, श्रीपालभाई, हिम्मतभाई
संसारी नाम	- कु. संतोष
व्यावहारिक अभ्यास	- प्रारंभिक विद्याभ्यास 6 कक्षा
संसारी व्यवसाय	- किराने के व्यापारी, बर्तन के व्यापारी
चतुर्थ व्रत स्वीकार	- दीक्षा 13 वर्ष
दीक्षा	- जेठ सुदी चतुर्थी, संवत् 2030
बड़ी दीक्षा	- अषाढ़सुदी-दशमी, संवत् 2030
गुरुदेव श्री	- प.पू.सौम्ययशा श्रीजी म.सा.
प्रथम शिष्या	- पू. राजीताश्रीजी म.सा., पू.निर्मिताश्रीजी म.सा.
वर्तमान अंतिम शिष्या	- संयम वंदना श्रीजी म.सा.
कुल शिष्या, प्रशिष्या आज्ञावर्ती परिवार	- 3, प्रशिष्या 1 परमवंदनाश्री
गृहस्थ पर्याय	- 13 वर्ष
कुल संयम पर्याय	- 51 वर्ष
कुल आयुष्य	- 64 वर्ष
प्रथम चार्तुमास	- सुरेन्द्र नगर
वर्तमान चार्तुमास	- श्री सिद्धचक्रधन तीर्थ, उज्जैन
कुल चार्तुमास	- 51
प्रसिद्धि विशेष	- मधुर भाषिणी, रिंगनोद पार्श्व पद्मावती तीर्थ संस्थापिका
सुप्रसिद्ध गुण विशेष	- गुरु माँ
पुस्तक	- विशस्थानक, सौम्य संगीत, पार्श्व पद्मावती आराधना
भाषा ज्ञान	- हिन्दी, गुजराती, संस्कृत, प्राकृत
जैन जगत को विशिष्ट भेंट	- पार्श्व पद्मावती पावनधाम तीर्थ रिंगनोद, इन्दौर-सुखलिया संघ, उपकारिका
सौम्य पहचान	- मधुर भाषिणी
विहार यात्रा	- गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र
चार्तुमास राज्यवार क्षेत्र	- गुजरात, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र, राजस्थान, मध्यप्रदेश
जीवन का लक्ष्य	- जाप, ध्यान, साधना, आराधना, दिन दुखियों के बेली
तपाराधना	- पंचमी, विशस्थानक तप, वर्धमान तप की 27 ओली, अट्ठम, 11 उपवास, सिद्धितप, नवपद ओली, दशमी तप, चैत्री पूनम आदि।

खतरगच्छ सहस्राब्दी : अलभ्य/दुर्लभ ऐतिहासिक प्रसंग

✻ ललित कुमार नाहटा

भगवान श्रीमहावीर के शासन काल में अनेकों सम्प्रदायों तथा गच्छों का प्रादुर्भाव हुआ एवं समयकाल के चक्र से अनेकों तिरोहित हो गये। उनमें से खातरगच्छ एक विरल एवं विशिष्ट धर्मसंघ है, जो 1000 वर्षो के सुदीर्घ कालखण्ड में अपने ज्योतिर्धर आचार्यो, प्रखर चारित्रवान साधु-साध्वियों, धर्मनिष्ठ एवं सिद्धांत प्रिय श्रावक-श्राविकाओं के गौरवशाली कृतित्वों एवं कीर्तिमानकारी उपलब्धियों से अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित कर पाया है। इस जीवन्त गतिशील परम्परा को उज्जवलतर बनाने का हम सभी पर गुरुतर दायित्व भी है।

खतरगच्छ ने जैन धर्म एवं भारतीय संस्कृति को साहित्य कला, भाषा, अध्यात्म, दर्शन आदि विविध क्षेत्रों में बहुविध समृद्ध किया है। खरतरगच्छ अनुयायियों ने तीर्थो जिनालयों, दादाबाड़ियों, ज्ञान भंडार, कला भंडार आदि के माध्यम से हमारी संस्कृतिक संपदा तथा विरासत को समृद्ध किया है। प्रतिकूल परिस्थितियों तथा व्यवधानों का सामना एवं प्रतिरोध करते हुए खरतरगच्छ हजार वर्षो से एक जीवन्त, सतत गतिशील धर्मसंघ है।

खारतरगच्छ सहस्राब्दी वर्ष का अलभ्य, विरल ऐतिहासिक प्रसंग हमारे जीवनकाल में आया है, जो अत्यन्त सौभाग्य का विषय है। इस अलभ्य अवसर को चिरस्थायी बनाने के लिये परम् श्रद्धेय खरतरगच्छाचार्य श्री जिनपीयूष सागर सूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में ''श्री खारतरगच्छ सहस्राब्दी महोत्सव समिति'' द्वारा इस सहस्राब्दी वर्ष को महामहोत्सव के रुप में मनाने के लिये देशभर में विविध कार्यक्रमों तथा प्रकल्पों को प्रारंभ किया गया है। पर्वताधिराज पालीताना की पुण्यधरा पर 25 से 27 दिसंबर 2023 को समिति द्वारा राष्ट्रीय स्तर के वशिष्ठ कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे।

आप सभी से निवेदन है कि आप विविध आयोजन कर जन-जागरण के माध्यम से सबको सहस्राब्दी महोत्सव से जोड़ें तथा समिति के कार्यो में सहयोग तथा सहभागिता करें। आप सभी सहयोग एवं भागीदारी से ही हम सहस्राब्दी दशक में गच्छ गौरव को विस्तारित कर सकेंगे। आईये, हाथ से हाथ जोड़कर इस हेतु संकल्पत एवं प्रयासरत होवें।

पर्वाधिराज लेकर आया है धर्म आराधना
गुरु भगवंतों की सेवा में करनी है साधना
दान,शील,तप,भाव में बीते समय निरंतर
यही पर्युषण पर्व की
हार्दिक शुभकामना।

अलग-अलग जीवों में आत्मा !

✻ एकेन्द्रिय में छह आत्मा (ज्ञान, आत्मा तथा चारित्र आत्मा को छोड़कर) पाई जाती है।

✻ द्विविन्द्रय से संज्ञी तिर्यंच तथा श्रावक में सात आत्मा (चारित्र आत्मा को छोड़कर) पाई जाती है।

✻ अकषायी, अरहंतों में सात आत्मा (कषाय आत्मा को छोड़कर) पाई जाती है।

✻ सिद्धों में चार आत्मा-द्रव्य, ज्ञान, दर्शन और उपयोग आत्मा पाई जाती है।

✻ साधु में आठ आत्मा पाई जाती है।

✻ आठ आत्मा में सबसे ज्यादा व सबसे कम जीव।

✻ द्रव्य, उपयोग तथा दर्शन आत्मा के सबसे ज्यादा जीव तथा चारित्र आत्मा के सबसे कम जीव है।

✻ आत्मा श्वास लेती है या शरीर ?

✻ केवल आत्मा श्वास लेती है, न केवल शरीर, आत्मा व शरीर दोनों का संग होता है, तब प्राण शक्ति के द्वारा श्वास लिया जाता है।

✻ आत्मा खाती है या शरीर ?

न केवल आत्मा खाती है, न केवल शरीर। दोनों के संयोग से प्राण शक्ति उत्पन्न होती है, उसके द्वारा खाया जाता है।

✻ आत्मा बोलती है या शरीर ?

न केवल शरीर। दोनों के योग से प्राण शक्ति पैदा होती है, वह प्राण शक्ति बोलती है

मन में भगवान की वाणी का बज रहा संगीत
महावीर प्रभु से जोड़ली मैंने ऐसी प्रीत
ज्ञान,दर्शन,चरित्र की हो उत्कृष्टआराधना
हमेशा के लिये मिल जाए सुख आत्मिक।

सहनशीलता, क्षमा और करुणा जीने के तीन सूत्र

संकल्प वह शक्ति है जिसके आगे दुनिया की तमाम शक्तियां निर्बल हो जाती है। जीवन एक संकल्प है। संकल्प में ही जीवन की सफलता है। संकल्प में ही जीवन की सफ्लता है। संकल्प के सम्मुख विश्व की समस्त सफलताओं को नतमस्तक होना पड़ता है।

संकल्प हर सफलता का आमंत्रण कार्ड है। तमाम सफ लताएं संकल्प के नारों की तरह घुमती रहती है। संकल्प का जन्म आत्मविश्वास से होता है और आत्मविश्वास संकल्प पर आधारित है। दोनों एक दूसरे के पूरक है।

हमारे जीवन में सहनशीलता आ जाए, क्षमा को धारण कर ले तो करुणा की बरसात होने लगती है और हमारा जीवन परिवर्तित होने लगता है। संयमित होना और धैर्य धारण करना आसान है लेकिन करना बहुत कठोर है। जो हमारी निंदा करते है, व्यवधान करते हैं, उनको केवल बाहर से क्षमा नहीं करना अपितु मन की कल्पना को समाप्त कर देना क्षमा है।

जिन-जिन आत्माओं ने करुणा की बरसात की वे इस जगत में राम, कृष्ण, बुद्ध व महावीर के रुप में पूजित हो गए। आपने पानी के महत्व को बताते हुए कहा कि पानी महत्वपूर्ण है। इसके बिना जीवन संभव नहीं है। पानी दो प्रकार का होता है। एक धरती का पानी, दूसरा आँख का पानी। जब धरती का पानी समाप्त हो जाएगा तो जीवन जीना असंभव हो जाएगा और जब किसी की आँख का पानी समाप्त हो जाता है तो मर्यादाएँ, शर्म, हया सब समाप्त हो जाती है। जिससे पूरा जीवन नरकमय हो जाता है। इसलिए आप धरती के पास के साथ-साथ आँख के पानी का भी ख्याल रखिए। हमारे जीवन में सहनशीलता, क्षमा और करुणा तिरोहित हो जाती है।

नाणासु गणेसु अरहंताइसु अरहंतासु धम्मसु।
धम्मो गर साहुम्मिसु धम्मत्थं जो य गुणरागो॥ 1॥
सो सुपसत्यो रागो धम्मसंयोगकारणे गुणवदो।
पढम काययो सो पत्तगुणे ववध तं सव्वं॥ 2॥

अर्थ- *अरिहन्तादि पांच परमेष्ठियों पर तथा ज्ञान दर्शन चारित्रादि गुणों में, धर्मोपकरण-अर्हत् पूजा के उपकरण, कलशादि एवं पूजन सामग्री, साधु-साध्वी के वस्त्रापात्र रजोहरणादि, श्रावक-श्राविका के ग्रासन मुख वस्त्रिका चरवला आदि दर्शन के- जिनमंदिर प्रतिमा आदि, ज्ञान के शास्त्र, पुस्तकें, पाटी, ठवणी, सँापड़ा सॉपड़ी, लेखनी, पेन-पेंसिल कागज आदि सर्व अध्ययन एवं अध्यापन सामग्री तथा स्व-बन्धु भगिनी के प्रति धर्मार्थ जो अनुराग है वह गुणानुराग है, अतः सुप्रशस्त राग है, धर्म-संयोग होने का कारण है, गुणदाता है, वह तो प्रथम करने ही योग्य है। जब क्षायिक ज्ञानादि गुण प्राप्त हो जाते है, तब इस राग का स्वयं ही क्षय हो जाता है।*

सहस्त्रकूट में 1024 भगवान कैसे होते हैं?

✻ हम भरत क्षेत्र में रहते है। ऐसे 5 भरत क्षेत्रों और 5 ऐरावत क्षेत्रों है। वो सभी में 1 काल में 24-24 भगवान होते है। यह 10 क्षेत्रों में 24X10=240 भगवान वर्तमान काल में हुए है। गई चोवीसी में 240 भगवान हो गये और आनेवाली चौबीसी में 240 भगवान होंगे। ऐसे भरत-ऐरावत क्षेत्रों में 240+240+240=720 भगवान होते हैं।

✻ महाविदेह क्षेत्र में 32 विभाग है। विभाग को विजय कहते हैं। वो सभी में 1-1 भगवान गिने तो महाविदेह क्षेत्र 5 होने से 32X5=160 भगवान होते है।

✻ चौवीस भगवान का च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान और मोक्ष कल्याणक गिनते 24X5=120 होते है।

✻ वर्तमान काल में सभी महाविदेह क्षेत्र में 4-4 भगवान है। 5 महाविदेह क्षेत्र है। 4X5=20 विहारमान तीर्थंकर विचर रहे है।

✻ 4 शाश्वत जिन : ऋषभ, चंद्रानन, वारिषेण और वर्धमान=4 तीर्थंकर।

✻ 720+160+120+204=1024 भगवान होते है।

क्षमापना : शाश्वत मूल्य

* साध्वी श्री नगीनाजी

भगवान बुद्ध एक गांव में गुजर रहे थे। कुछ मनचले लोगों ने पत्थर फेंके, तथागत वहीं रुककर बोले, ''और किसी को फेंकना हो तो फेंक सकते हो।'' किसी ने पूछा- ''आपको गुस्सा क्यों नहीं आता ?'' मुस्कान के साथ तथागत ने उत्तर दिया- आज से 5 साल पहले यहां होता तो क्रोध अवश्य आ सकता था क्योंकि उस समय मैं अपना मालिक नहीं था। प्रतिक्रिया का जीवन जीने वाला अपने पर अपना अधिकार नहीं जमा पाता। अब मुझ पर मेरा शासन है। उनकी भावधारा ने उपस्थित लोगों को नत मस्तक कर दिया।

शिशुपाल ने श्रीकृष्ण के साथ दुर्व्यवहार किया। तीखें वचन बाणों से बींधा किन्तु श्री कृष्ण शान्त थे। अर्जुन ने कहा- ''आप मौन रहकर गरल घूंट क्यों पी रहे हैं ? जबकि आप समर्थ है उसे जवाब देने के लिए।'' श्रीकृष्ण ने कहा- पार्थ ? तुम ठीक कहते हो। मैं एक क्षण में ही इसे मार सकता हूं किन्तु एक प्रश्न मेरे मस्तिष्क पर दस्तक दे रहा है।''

क्या बल का धर्म, सामर्थ्य का गौरव सदा दण्ड देना ही है। क्षमा करना नहीं। क्षमा बलवान ही कर सकता है। मैं अपनी शक्ति की थाह ले रहा हूं कि- वह कितनी मेरी है। शक्ति उतनी ही हमारी होती है जितनी पर हमारा अधिकार होता है। हमारा अंकुश होता है।

एक पंडितजी भाषण दे रहे थे। विषय था- क्रोध मत करो। कुछ श्रोता ध्यान से सुन रहे थे, कुछ ऊंध रहे थे। पंडितजी ने उन्हें कई बार टोका किन्तु उन्होंने ध्यान नहीं दिया। इस अपेक्षा भाव ने पंडित को क्रोध से भर दिया। भाषण का विषय था, क्रोध मत करो। भाषण देने वाला स्वयं भल्ला उठा। प्रश्न उठा- क्रोध क्यों आया ? प्रश्न को उत्तरित करने के लिये स्थानांग सूत्र का प्रसंग उचित है। भगवान महावीर ने क्रोध की उत्पत्ति के चार कारणों का विवेचन किया है-

आत्म-प्रतिष्ठित- जो अपने ही निमित्त से पैदा होता है। पर प्रतिष्ठित- दूसरों के निमित्त से पेदा होता है।

तद्मय प्रतिष्ठित- स्व और पर के निमित्त से उत्पन्न होता है।

अप्रतिष्ठित- जो केवल क्रोध वेदनीय के उदय से उत्पन्न होता है।

क्रोध उत्पत्ति के निमित्तों के विषय में मनोविज्ञान की चर्चा भी विमर्शणीय है। विज्ञान ने वे बिन्दु खोज लिये है जहां से क्रोध पैदा होता है।

क्रोध मस्तिष्क का तापमान बढ़ाता है। हृदय को असंतुलित बनाता है और एड्रीनल का ज्वर है। शरीर की तीनों महत्वपूर्ण शक्तियों पर घातक प्रभाव करता है। इससे व्यक्ति बेचैन हो जाता है, हृदय की धड़कन बढ़ जाती है, सांस फूल जाता है। एडीनल को अतिरिक्त स्राव करना पड़ता है। सारा अस्त-व्यस्त हो जाता है।

क्रोध से एक क्षण में 1500 रक्त कण जल जाते हैं। जो खून संसार की बड़ी से बड़ी फैक्ट्री नहीं बना सकती वह क्रोध के कारण अनायास जल जाते हैं।

आश्चर्य है आदमी क्रोध के विपाक को जानता हुआ भी क्रोध करता है, कुछ प्रकृति की परवशता से करते हैं। कभी-कभी स्थिति का यथार्थ बोध नहीं होने से क्रोध का उद्‌गम हो जाता है।

यद्यपि क्रोध आत्मा का स्वभाव नहीं, विभाव है। पानी एक द्रव्य है उसका स्वभाव है- तरलता, शीतलता। आग से गर्म होने पर भी पुनः शीतलता की ओर बढ़ जाता है, क्योंकि उष्णता उसका स्वभाव नहीं। वह उसमें रह नहीं सकता।

विभाव में जीना कठिन होता है। विभाव चिन्तन का दोष है। इससे चिन्तन स्वस्थ नहीं रहता। अस्वस्थ चिन्तन ही तनाव पैदा करता है।

जीवन के मूल्य दो प्रकार के होते हैं- सामायिक-शाश्वत। सामायिक मूल्य समय के साथ बदल सकते हैं किंतु शाश्वत मूल्य नहीं। क्षमा, सहिष्णुता, मृदुता, ऋजुता, अहिंसा, मैत्री ये शाश्वत मूल्य है। इन मूल्यों को जीवन में स्थापित करना विकास की अनिवार्यतम अपेक्षा है।

पर्युषण पर्व का महत्व इसलिए नहीं कि समग्र जैन समाज एक रुप से जानते है या तप उपधान किया जाता है। पर्व का महत्वपूर्ण उद्‌देश्य है- आवेगों का उपशमन, क्रोध का विलय, वृत्तियों का परिष्करण और क्षमा की प्रतिष्ठा।

श्री अन्तरिक्षजी तीर्थ का इतिहास....

वर्तमानकाल में सबसे प्राचीन जैन प्रतिमाएं है:-

1- श्री नेमिनाथ दादा तीर्थ, गिरनार तीर्थ।

2- श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ दादा, शंखेश्वर तीर्थ।

3- श्री अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ दादा, सिरपुरा।

हम सब गिरनार तीर्थ और शंखेश्वर तीर्थ के बारे में तो बहुत कुछ जानते है, किन्तु अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ के बारे में हमें अधिक जानकारी नहीं है।

श्री अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ तीर्थ की कुछ मुख्य बातें :-

✻ 42 इंच की अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा 11,80,000 वर्ष प्राचीन है।

✻ प्रतिमाजी मिट्टी और गाय के गोबर से बनी प्रभु मुनिसुव्रत स्वामी के काल में भी पूजी गई थी।

✻ इस भव्य चमत्कारी प्रतिमा का इतिहास बहुत ही प्राचीन है। श्वेतांबर मान्यतानुसार कहा जाता है, राजा रावण के बहनोई पाताल लंका के राजा खरदूषण के सेवक माली व सुमाली ने पूजा निमित्त इस प्रतिमा को जाते समय प्रतिमाजी को नजदीक के जलकुंड में विसर्जित किया।

✻ शताब्दियों तक प्रतिमा जलकुंड में अदृश्य रही जो कि विक्रम संवत् 1142 में चमत्कारिक घटनाओं के साथ पुनः प्रकट हुई। तत्पश्चात् श्री भावविजयजी गणी के सुपदेश से मंदिर का जीर्णोद्धार करवाकर उन्हीं के सुहस्ते विक्रम संवत् 1715 चैत्र शुक्ल 5 के दिन शुभ मुर्हूत में प्रतिष्ठा पुनः सम्पन्न हुई।

✻ राजसेवक माली और सुमाली अनवधान से पूजा के लिए प्रतिमा लाना भूल गये थे, इसलिये पूजा के निमित्त यहां पर इस स्थान से वापिस जाते समय नजदीक के जलकुण्ड में विसर्जित किया था। प्रतिमा शताब्दियों तक जलकुण्ड में अदृश्य रही।

✻ समयान्तर में इस कुण्ड के जल का उपयोग करने पर एलीचपुर के राजा श्रीपाल का कुष्टरोग निवारण हुआ। इस आश्चर्यमयी घटना पर विचार विमग्न चिंतन करते समय राजरानी को स्वप्न में दुष्टन्त हुआ कि इस जलकुण्ड में श्री पार्श्वप्रभु की प्राचीन व चमत्कारिक प्रतिमा विराजमान करके खुद सारथि बनकर मन चाहे वहां निशंक मन से ले जा सकता है। शंका करना नहीं व न पीछे मुड़कर देखना।

उक्त दुष्टान्त पर राजा द्वारा अन्वेषण करवाने पर प्रतिमा प्राप्त हुई। राजा ने प्रतिमाजी को विशाल जनसमूह के बीच धूमधाम के साथ वैसे ही वाहन पर रखकर उसे एलिचपुर ले जाने का उपक्रम किया, वाहन के साथ प्रतिमा चली पर बीच में राजा के मन में शंका हुई कि इतनी बड़ी प्रतिमा गाड़ी के साथ आती है या नहीं इसलिए उसने शांत हृदय से पीछे मुड़कर देखा तो प्रतिमाजी उसी जगह पर एक पेड़ के नीचे आकाश में उधर स्थिर हो गई। कहा जाता है उस समय इस प्रतिमाजी के नीचे घुड़सवार निकल जाय इतनी ऊंची उधर थी।

राजा इस चमत्कारिक घटना से प्रभावित हुआ। वहीं पर एक भव्य मंदिर का निर्माण करवाया व उस मंदिर में प्रभु को प्रतिष्टि करवाना चाहा। प्रतिष्ठा के समय राजा के मन में अहंकार आ जाने कारण, लाख कोशिश करने पर भी प्रतिमा अपने स्थान से नहीं हिली। मंदिर सुना का सुना ही रहा। जो आज भी ''पावली मंदिर''के नाम से प्रसिद्ध है। जिस पेड़ के नीचे प्रतिमा स्थिर हुई थी वह भी मंदिर के नजदीक ही स्थित है। प्रतिष्ठा के समय उपस्थित आचार्य श्री अभयदेव सूरीश्वरजी के उपदेश से श्री संघ ने गांव के बीच एक दूसरा विशाल संघ मंदिर बनवाया और राजा के सानिध्य में संघ मंदिर में प्रतिष्ठा करवाने का निर्णय लेने पर प्रतिमाजी का संघ मंदिर में आगमन हुआ और बड़े उत्साह व मंगलध्वनि के साथ प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

वि.सं. 1715 में श्री भावविजयगनीजी को प्रभु दर्शन की अभिलाषा होने पर अंतरिक्षजी आए व भाव से प्रभु दर्शन करने पर आंखों की गई रोशनी फिर से आई, अंधापा दूर हुआ। उन्होंने यहां रहकर जीर्णोद्धार करवाया वि.सं. 1715 चैत्र शुक्ल 5 को पुनः प्रतिष्ठा करवाई उस समय प्रतिमाजी जमीन से एक अंगुल प्रमाण अधर रही, जो अभी भी यशावत है। लेकिन वर्तमान में काल के प्रभाव से बाये किनारे पर नहींवत बिन्दुमात्र का भाग का स्पर्श हुआ नजर आता है।

चमत्कार:- श्री भाव विजयजी गणी को आंख का भयंकर रोग लागू पड़ा था। विजयदेवसूरीजी की सूचना से उन्होंने पद्मावती मंत्र की आराधना की। पद्मावतीदेवी ने अंतरिक्ष पार्श्वनाथ प्रभु का इतिहास व महत्व समझाया। पू. भावविजयजी गणी संघ सहित अंतरिक्षजी पधारे।

महापर्व पर्युषण

वर्तमान की भौतिकतावादी खाऊपियो मौजकरो वाली दुनिया में मानव को आध्यात्मिकता और धर्म का पावन संदेश देनेवाला महापर्व पर्युषण हमारे जीवन को संवारने का काम करता है। स्वार्थ, भोगलिप्सा में आकण्ड डूबे मानव को एक आशामय और तात्विक जीवन जीने का मौका देनेवाला विश्व में एक मात्र महापर्व पर्युषण है। प्रतिवर्ष हमें जीवन को कैसे जीना इस बात को सजग प्रहरी बनकर ही नहीं बल्कि हमें पूर्ण संरक्षण देने का काम भी यह पर्व करता है। जीवन जीने के मूल तत्वों क्षमा, संयम, तप, त्याग से हमारा परिचय करानेवाला यह महापर्व हमें भव भटकन से बचाने के साथ किसी अधर्म कार्य में हमें अटकाता भी नहीं है क्योंकि धर्म के मार्ग का आधार लेनेवाला अधर्म कर्म करने के पहले दस बार विचार करेंगे। धर्म से समंवित कर्म सर्वत्र ही सौहार्द एवं सुख का संसार विस्तृत करता है।

॥ श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथाय नमः ॥

श्वेतांबर जैन समाज

पुजा की समय सारणी

और कुछ विशेष सुचना

वार	सुबह	दोपहर	शाम
सोमवार	06 से 09	12 से 03	06 से 08
मंगळवार	09 से 12	03 से 06	08 से 10
सुदी–बुधवार	06 से 09	12 से 03	06 से 08
वदी–बुधवार	09 से 12	03 से 06	08 से 10
गुरुवार	06 से 09	12 से 03	06 से 08
शुक्रवार	09 से 12	03 से 06	08 से 10
शनिवार	06 से 09	12 से 03	06 से 08
रविवार	09 से 12	03 से 06	08 से 10

• सुचना •

1. (अ) श्रावण (मारु भाद्रपद) वदी 10 से भाद्रपद सुदी ४ तक श्वेतांबर पक्ष के पर्युषण पर्व के 10 दिन सिर्फ सबुह 6 से 9 तक, तीन घंटे दिगंबरोने पुजन करना और बाकी के 21 घंटे श्वेतांबर लोगोने पुजा करना ।
   (ब) भाद्रपद सुदी 5 भाद्रपद सुदी 15 तक दिगंबर लोगोके दस लाक्षणी वृतके 10 दस दिनतक सुबह 6 से 9 बजे तक तीन घंटे श्वेतांबरने पुजन करना बाकी 21 घंटे दिगंबरीओने पुजन करना ।
2. अश्विन (मारु कारतीक) वदी 14 के रोज सबुह 6 से 9 बजे तक श्वेतांबर लोगोने पुजन करना बाकी 21 घंटे दिगंबर लोगोने पुजन करना ।
3. अश्विन (मारु कारतीक) वदी 30 के रोज सबुह 6 से 9 बजे तक दिगंबरोने पुजन करना, बाकी 21 घंटे श्वेतांबरने पुजन करना ।
4. श्री अंतरिक्ष दादा के सामने कोई भी द्रव्य, फळ, नैवेद्य, पैसे ना रखे ।

श्री अंतरीक्षजी महातीर्थ में पधारने वाले यात्रियों के लिए जरुरी मोबाइल नंबर की यादी । तीर्थ मे AC / Non AC रूम है ।
❖ धर्मशाला : 9158871999 ❖ वाहन व्यवहार / भोजनशाला : 9067546999

क्षमा महापर्व का प्राण है, क्षमा में मां छुपी हुई है जिस प्रकार मां अपने पुत्र को सब प्रकार से सुरक्षित, विकसित करने के लिये पूर्ण समर्पित रहती है, इसी प्रकार क्षमा की शक्ति अनंत और अतुल्य है, क्षमा, श्रावक और साधक ही नहीं बल्कि मानव मात्र के कल्याण का हेतु है। क्रोध हर परिस्थिति से बुरा है, क्षमा धर्म है और जब इस बात की चर्चा हो तो क्रोध की चर्चा होना स्वाभिक है क्योंकि दुनिया क्रोध से तो अच्छी तरह परिचित है पर क्षमा के व्यापक प्रभाव को नहीं जानती है। यह तो क्षमा को धारण करनेवाला ही इसके परिणाम को समझ सकता है। अंहकार क्षमा के रास्ते की अड़चन है, समर्पण ही इसका समाधान है। समर्पण जीवन को स्वर्ग बना सकता है। परीक्षा हमेशा अच्छे और सच्चे की ही होती है। कांच कोयले की परीक्षा नहीं होती है इसलिये मन को पवित्र बनाकर जीना सीखे, देह की शुद्धि से अधिक मन की शुद्धि की आवश्यकता है, निष्कपट व्यवहार से आनंद प्रकट होता है। शक्ल खराब हो यह चल सकता है पर व्यवहार और बोली से सबको जीता जा सकता है। जीवन परिवर्तन की प्रयोगशाला है, महापर्व की आराधना मन, वचन और काया में परिवर्तन यह पर्व की प्राथमिक शिक्षा है।

महापर्व धर्म समाज की रक्षा का पर्व है, धर्म बातों से नहीं आचरण से चलता है। महापर्व भी धर्म आधारित आचरण का आव्हान करता है, जुबान में सक्ती न हो इसलिये उसमें हड्डी नहीं दी है। कहो वहीं जो सच्चा हो, देखो वही जो सत्यं-शिवं सुन्दरम् हो, खाओ वहीं जो प्रसाद हो पियो वहीं जिसमें अल्हद नाद हो, चाल वहीं हो जिसमें चरित्र हो और कार्य वहीं करो जो पवित्र हो ऐसा सब कुछ जीवन में होगा तो उसमें सुन्दरता कैसे नहीं आयेगी ? यही जिनदर्शन है और इसी की उद्घोषणा करता महापर्व पर्युषण है।

गलती को माफ करके देखिए।

एक नामी उद्योगपति ने यूनिवर्सिटी के एक बड़े समारोह में हजारों छात्रों और शिक्षकों के बीच जब अपनी आपबीती सुनाई तो यहां बैठे सभी लोगों की आंखों से आंसू टपक पड़े। कहानी कुछ इस तरह से थी।

एक कक्षा में बहुत से छात्र बैठे थे। अचानक एक छात्र उठा और उसने घबराते हुए प्रोफेसर से कहा कि उसके पिताजी ने इस बार उसके जन्म दिन पर उसे बहुत कीमती घड़ी गिफ्ट में दी थी, लेकिन वह थोड़ी देर पहले ही किसी ने चुरा ली है।

इस पर प्रोफेसर ने कहा कि- बहुत देर से कोई भी छात्र न तो कक्षा से बाहर गया और न बाहर से भीतर आया। इसका मतलब यह है कि जिसने भी घड़ी उठाई है, वह इसी कक्षा में है।

इसके बाद प्रोफेसर ने सभी को अपनी आंखों पर पट्टी बांधने और एक लाइन में खड़े होने को कहा। प्रोफेसर ने एक-एक करके सबकी जेब पर हाथ लगाना शुरु किया। कुछ ही देर में एक लड़के की जेब में घड़ी मिल गई। प्रोफेसर ने चुपचाप वह घड़ी निकाली और उसके मालिक को मुस्कराते हुए दे दी। प्रोफेसर ने किसी से कुछ नहीं कहा। सबकी आंखों पर पट्टी होने की वजह से किसी को कुछ पता नहीं चला कि घड़ी किसने चुराई थी।

अगले दो-तीन दिन तक घड़ी चुराने वाला लड़का मन ही मन घबराता रहा कि उसका राज खुल जाएगा लेकिन किसी को मालूम नहीं हुआ कुछ ही महिनों में वे सभी छात्र पढ़ाई खत्म करके कॉलेज से निकल गये।

बहुत साल बाद कॉलेज में पुराने छात्रों का रीयूनियन का कार्यक्रम था। वह छात्र जिसने चोरी की थी, अब एक बड़ा उद्योगपति बन चुका था। वह अपने प्रोफेसर के पास गया तो उसकी आंखों से टप-टप आंसू गिरने लगे। उसने प्रोफेसर से कहा- मेरे जीवन पर आपका बहुत बड़ा कर्ज है। यदि आज मैं जिदा हूं तो केवल आपके कारण।

प्रोफेसर हैरान हुए और कुछ समझ नहीं पाए। ऐसा कहने का कारण पूछा।

उस छात्र ने कहा- सर एक बार आपकी कक्षा में एक घड़ी चोरी हुई थी। तब आपने सबकी आंखों पर पट्टी बंधवाकर सबकी जेब चेक की थी। मैं शर्मिंदगी में इतना घबरा गया था कि- मैंने निर्णय ले लिया था कि यदि उस दिन सबको इस बात का पता लग गया कि घड़ी मैंने चुराई तो मैं आत्महत्या कर लूंगा। वह घड़ी मेरी जेब से मिली थी, लेकिन आपने उस बारे में किसी को नहीं बताया। आपने मुझे माफ कर दिया था और उस दिन आपने मेरी इज्जत रख ली। उस दिन मुझसे गलती हो गई थी और मैंने अपने आप से वादा किया था कि मैं कुछ बनकर दिखाऊंगा। यदि आप उस दिन मेरी चोरी के बारे में सबसे कह देते तो मैं अपनी जान दे देता।

प्रोफेसर ने धीरे से कहा- मैं नहीं जानता था कि वह घड़ी तुमने ली थी। मैंने तुम सबकी आंखें तो पट्टी से बंद करवा दी थी, लेकिन साथ ही साथ अपनी आंखों पर भी पट्टी बांध ली थी। मैं नहीं चाहता था कि मुझे पता चले कि मेरे किस छात्र ने यह काम किया है, ताकि अपने किसी छात्र की वैल्यू मेरी नजरों में हल्की न हो।

यह सुनते ही वह लड़का जो अब एक नामी उद्योगपति था, नतमस्तक हो गया। व्यवहार की इतनी उच्चता, इतनी विनम्रता, इतनी उदारता उसकी कल्पना से परे था। उसकी आंखों में उस प्रोफेसर का सम्मान और भी कई गुना बढ़ गया। किसी की गलती पता चलने पर उसका अपमान करना आम बात है, सबके बीच उसकी निंदा करना और सजा देना भी आम बात है, लेकिन उसकी गलती माफ कर आत्मसम्मान बचाने का मौका देना महानता है। प्रबंधन का सिद्धांत है कि प्रशंसा सबके बीच करो और निंदा अकेले में। माफ करना और माफी मांगना दोनों शक्तिशाली लोगों का काम है।

एक बार किसी की गलती को भूलकर उसे माफ करके देखिए। अधिकांश मामलों में स्टाफ से लेकर संतान तक, जिन्हें आपने माफ किया है, वे दिल की गहराई से आपके ऋणी हो जाएंगे और आप उनकी नजरों में बेहद ऊंचे उठ जाएंगे।

श्री अरिहंत परमात्मा के 12 गुण की बात जानते है...!

1- अशोक वृक्ष:- जहां परमात्मा का समवसरण होता है वहां उनके शरीर से 12 गुना ज्यादा बड़ा आसोपालन का वृक्ष देवता बनाते है। उस वृक्ष के नीचे बैठ के परमात्मा देशना देते है।

2- सुरपुष्प वृष्टि:- एक योजन तक देवता सुगंधि ऐसे पांच वर्ण के फूल की वृष्टि गुडे तक करते है।

3- दिव्य ध्वनि:- परमात्मा मालकोश राग में देशना दे रहे होते है तब देवता उसमें वीणा, बांसुरी आदि साधनों से मधुर ध्वनि देते है।

4- चामर:- रत्नजड़ित सुवर्ण की डंडे वाले चार जोड़ी सफेद चामर से देवता परमात्मा की पूजा करते है।

5- आसन:- परमात्मा को बैठने हेतु रत्नजड़ित सुवर्णमय आसन देवता बनाते है।

6- भामंडल:- परमात्मा के मुख पर इतना तेज होता है कि आम इन्सान उसे देख नहीं सकता इसलिए देवता भामंडल की रचना करते है जो शरद ऋतु के सूर्य के जैसा दिखता है, यह भामंडल परमात्मा के मुख के तेज को अपने अंदर खींच लेते है जिससे उनका मुख सामान्य मानवी देख सकता है।

7- दुदभि:- परमात्मा का समवसरण हो तब देवता देव दुंदुभि आदि वाजिंत्र बजाते है, जो यह सूचना करता है कि ''हे भव्य जीवों ! आप सब शिवपुर तक ले जाने वाले इन भगवंत की सेवा करो।''

8- छत्र:- परमात्मा के मस्तक के ऊपर मोतियों के हार से सुशोभित ऐसे छत्र देवता बनाते है-परमात्मा पूर्व दिशा में बैठते है और देवता उनके तीन प्रतिबिंब बनाके बाकी तीन दिशा में स्थापित करते है-सभी दिशा में तीन छत्र होते है ऐसे कुल 12 छत्र बनाते है।

यह आठ गुण देवता द्वारा निर्मित होते है, इन्हें अष्ट प्रातिहार्य कहते है। बाकी 4 गुण परमात्मा के होते है। हमें सोचना है कि क्या हम पूजा, स्नात्र आदि भक्ति करते है तब समवसरण जैसा माहोल बनाते है ? कहीं कोई मुनिवर प्रवचन दे रहे होते है तो क्या हम समवसरण की महक महसूस करते भी है ? एक बात है- इन आठ प्रातिहार्य में से एक गुण हमने खूब अपनाया है- वो है दिव्य ध्वनि-परमात्मा की वाणी में देवता बांसुरी के मधुर स्वर जोड़ देते है और आज के मार्डन देवता हम व्याख्यान में मोबाईल के अति मधुर स्वर जोड़ देते है। कई बार देखा गया है कि व्याख्यान चल रहा हो और हमारे मोबाइल बजते है उस समय। हमें यह सोचना चाहिये और शिस्त बनानी चाहिये कि व्याख्यान में जाए तो मोबाइल साइलेंट करके बैठे। हमारी वजह से कितने लोगों की व्याख्यान रुचि में भंग होगा।

परमात्मा की भक्ति करो तो ऐसे कि देवता भी झुक जाए। कहीं हम देख पाते है कि चामर सालों पुराने होते है, कहीं एकदम छोटे-छोटे चामर होते है, कहीं छत्र एकदम काले होते है, कहीं पंखे और दर्पण टूटे हुए होते है, कहीं तो परमात्मा की प्रतिमाजी का भी हाल बुरा है। यह सब कैसे हो ? क्या हमारा कोई कर्त्तव्य नहीं है ? नए नए मंदिर हम बनवाते जाये और पुराने प्राचीन जिनालय, जिन प्रतिमा का ध्यान ना रखे तो क्या फायदा ? अगर घर में बहु-बेटे अपने माँ बाप को परेशान करे तो हम कहते है तुम्हारे बेटे भी बड़े हो के तुम्हें यही सबक देंगे- तो जरा सोचो, अगर पुराने जिनालयों का ख्याल ना रखा और नए बनवाते गये तो 100 साल के बाद हमारे बनाये हुए नए जिनालय का हाल भी यही होगा जो अभी हम पुराने का कर पाते है। जिनालय बनाना जरुरी है लेकिन हमारा प्राचीन समृद्ध वारसा है उसको भी हमें सम्भालना है।

अरिहंत परमात्मा की ऐसी ही उच्च भक्ति होनी चाहिए। अगर भक्ति में उच्च भाव आ गए तो समोसरण साक्षात नजर होगा। इस समोसरण को दूर देखाने में मरुदेवा माता मोक्ष को प्राप्त कर गए। हमारी सबकी इच्छा होती है कि समोसरण देखने का मौका मिले- अगर हमारा सत्व सही रहा तो समोसरण जिनालय में ही बन जायेगा और खुद सीमंधर स्वामी सामने दिखेंगे। यही भाव लाना जरुरी है- कर्म खपाने के लिए अरिहंत परमात्मा की अपूर्व भक्ति रोज करनी चाहिए।

✻ जिसे कुछ प्रिय नहीं, जिसे कुछ अप्रिय नहीं ; जिसका कोई शत्रु नहीं, जिसका कोई मित्र नहीं; जो मान-अपमान, लाभ-अलाभ, हर्ष-शोक, जन्म-मृत्यु आदि द्वंद्वों का अभाव करके शुद्ध चैतन्यस्वरुप में स्थित हुए है, होते हैं और होंगे, उनका अति उत्कृष्ट पराक्रम सानंदाश्चर्य उत्पन्न करता है।

गोचरी

साधु-साध्वी जो अपने जीवन निर्वाह के लिये शुद्ध आहार-पानी ग्रहण करते है, उसे गोचरी कहते है। पंच महाव्रतधारी साधु-साध्वियों को श्रावक निर्दोष आहार-पानी बहरावे, उसे सुपात्र दान कहते है। सुपात्र दान देने से कर्मो की महान निर्जरा होती है। सुपात्र दान देने के लिये निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है:-

❇ असूझता व्यक्ति दरवाजा ना खोले यानि कच्चा पानी, हरी सब्जी, या इलेक्ट्रानिक घड़ी, मोबाईल आदि से संयुक्त हो, तो दरवाजा नहीं खोलना वहराने के लिये भी आगे नहीं आना। घंटी नहीं बजाना, फूंक नहीं मारना, चुटकी-ताली नहीं बजाना। सात-आठ कदम सामने लेने आवे। सिर झुकाकर ''मत्थेपण वंदामि'' बोले।

❇ महाराज साहब को देखकर लाईट-पंखा, टीवी आदि को ऑन-ऑफ न करें, जैसे है वैसे ही रहने देवें।

❇ कच्चा पानी, हरी वनस्पति, ऊग सके ऐसे बीज जैसे- राई, सरसों, धनिया, कच्चा जीरा, कच्चा नमक आदि पदार्थो को तथा कच्चा सलाद, अंकुरित धान्य, फ्रिज, अग्नि से स्पर्श किये हुए पदार्थो को वहराने के लिये नहीं उठाऐं।

❇ आहार-पानी के बाद औषध-भेषज, वस्त्र, पात्र अन्य कोई सेवाकार्य हो तो पूछें। धर्मस्थान में, गोचरी के लिए मेरे घर चलो ऐसा न कहें।

❇ अहोभाव पूर्वक वहरावे, मन में प्रसन्नता के भाव रखें तथा बोलें बड़ी कृपा की, बारम्बार हमें सेवा का मौका प्रदान करें। पदार्थ शुद्धि, पात्र शुद्धि और पश्चात शुद्धि का ध्यान रखना विवेक है।

❇ आसपास के घर बतावें एवं गली तक पहुंचाने जावें। वहराते हुए अन्नादि से हाथ भर जाये तो कच्चे पानी से नहीं धोना।

❇ गोचरी की यतना रखना या बैठकर वहराना।

❇ आहार पानी वहराते हुए घुटने के ऊपर से गिर जावे तो घर असुझता हो जाता है।

❇ निर्दोष आहार पानी बहराना चाहिए। साधु-साध्वियों के निमित्त आहार-पानी नहीं बनाना चाहिये।

❇ श्रीऋषभदेव व श्रीमहावीर ने पूर्वभवों में सुपात्र दान देकर धर्म का मूल समकित प्राप्त किया एवं कालांतर में तीर्थकर बने।

❇ शालीभद्र ने पूर्वभव में तपस्वी संत को खीर वहराई एवं अतुल वैभव के मालिक बने।

❇ नेम-राजुल ने पूर्वभव में प्रासुक जल संतों को वहराया एवं महान् लाभ तीर्थकर गौत्र बंध को प्राप्त किया।

चौबीस तीर्थकर

1- शासन मिले ना मिले ना..... के बिना ? **-आदिनाथजी**
2- समृद्धि मिले ना.... के बिना ? **- सुमतिनाथजी**
3- विनय मिले ना.... के बिना ? **- अजितनाथजी**
4- उजाला मिले ना.... के बिना ? **- चंद्रप्रभुजी**
5- ठंडक मिले ना.... के बिना ? **- शीतलनाथजी**
6- सम्भव मिले ना.... के बिना ? **- सम्भवनाथजी**
7- पदवी मिले ना.... के बिना ? **- पद्मनाथजी**
8- यश मिले ना.... के बिना ? **-श्रेयांसनाथजी**
9- सुविधि मिले ना.... के बिना ? **-सुविधिनाथजी**
10-वंदन मिले ना.... के बिना ? **- अभिनंदनजी**
12-निर्मल बने ना.... के बिना ? **-विमलनाथजी**
13-धर्म होवे ना.... के बिना ? **- धर्मनाथजी**
14-आश्रय मिले ना.... के बिना ? **- अरनाथजी**
15-करुणा मिले ना.... के बिना ? **- कुंथुनाथजी**
16-शक्ति मिले ना.... के बिना ? **- अनंतनाथजी**
17-दया मिले ना.... के बिना ? **- सुपार्श्वनाथजी**
18-शांति मिले ना.... के बिना ? **- शांतिनाथजी**
19-चंदना तिरे ना.... के बिना ? **- महावीरजी**
20-ममता मिले ना.... के बिना ? **- मल्लीनाथजी**
21-कमठ हारे ना.... के बिना ? **- पार्श्वनाथजी**
22-नरक मिटे ना.... के बिना ? **- नमिनाथजी**
23-आनंद मिले ना.... के बिना ? **- अरिष्टनेमिजी**
24-मुक्ति मिले ना.... के बिना ? **- मुनिसुव्रतनाथजी**
25-अकेले हो .... को याद करो ? **-आदिनाथजी**
26-परेशान हो.... को याद करो ? **-पार्श्वनाथजी**
27-निराश हो.... को याद करो ? **- नेमिनाथजी**
28-मायूस हो तो.... की आराधना करो ?
- मुनिसुव्रतनाथजी

❇ धर्म ध्यान का बहता रहे झरना
पर्युषण पर्व की देते आपको शुभकामना !
❇ मैत्री भाव का लाया है संदेशा
सबको खमाते रहना हमेशा
तभी तो सार्थक होगा पर्युषण का पदार्पण।

दृष्टि बदले -सृष्टि अपने आप सुन्दर दिखने लगेगी .....

जैन दर्शन अत्यधिक प्राचीन दर्शन है, जैनत्व के मूल में ही समरसता, सद्‌भावना, सहअस्तित्व, परिग्रह और इन्द्रियों पर नियंत्रण की साधना के साथ जीवन निर्वाह करते हुए अंत में बोधि-समाधि और जिन गुणों की सम्पदा को प्राप्त करना हमारी संस्कृति की पहचान है, पर्व भी आठ दिनों तक लगातार यही घोषणा करते हैं कि जैनत्व सिर्फ वैराग्यमय धर्म नहीं बल्कि अपने दायित्व और जिम्मेदारियों के बोध से भी परिपूर्ण है। इसलिये तप का भी यही संदेश है कि हमने शरीर से अधिक सिद्धांतों को महत्व दिया है।

लोभ मान क्रोध मोह के त्याग के साथ संयममय जीवन जीने की बात करनेवाला पर्युषण पर्व को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है कि- चारो ओर आत्मा से रहनेवाले पाप कर्मों को जलाये,तपाये वह पर्युषण है। वैचारिक प्रदुषण से मुक्ति दिलाने का काम महापर्व करता है, जीवन में अध्यात्म से बड़ा सहारा कोई नहीं है, सुख-दुःख में समत्व कैसे आ सकता है। यह बात बतलाने ही पर्व आते है। पहले तप और इसके बाद त्याग और दान की महिमा बतलाई है। भोग के समय भी त्याग का भाव होना चाहिये। आसक्त भाव से नहीं अनासक्त भाव से भोग करने पर ही उपभोग सार्थक होता है।

संसार को बदलने की बात तीर्थंकर परमात्मा ने भी नहीं कही है, बदलना है तो हम अपनी दृष्टि को बदले संसार को नहीं। दृष्टि बदलेगी तो सृष्टि अपने आप ही सुन्दर दिखने लगेगी। अपने को बदलना ही आत्म आपरेशन है, महापर्व हमारी अपने आपकी साधना है, अपने आप का मंथन है, अपने अंदर का मंथन करें, आत्म अवलोकन करेंगे तो शुद्धात्मा के दर्शन होंगे। हमारी चेतना पर जो विकार उत्पन्न हो गये है उन्हें समझ कर ही दूर किया जा सकता है। यही हमारी उपासना है, पर्युषण का अर्थ भी यही है, मैं और मेरा के सामने हमें कुछ भी दिखाई नहीं देता है। मैं से हिंसा और घृणा जन्म लेती है और मेरा से परिग्रह की वृत्ति बढ़ती है, इससे मुक्ति का मार्ग पर्युषण दिखाते है। रागात्मक और द्वेषात्मक दृष्टि को बदलने के लिये ही महापर्व की आराधना है। पर्व अंतःकरण को पवित्र सरल निर्मल करने की आत्म औषधि है।

हम अधिक सजग, सचेत, जागृत रहते हुए सबसे व्यवहार करें। केवल शब्दों के उच्चारण मात्र से नहीं बल्कि हम आत्मीयता से क्षमा मांगे। आप सब हमें क्षमाभाव से प्रक्षालित करें यही मनोभाव।

आगमोद्धारक की सदस्यता एवं श्रुतभक्ति में दान देने के लिये ऑन लाईन बैंक की जानकारी

महोदय,

आगमोद्धारक की सदस्यता प्राप्त करने के लिये सदस्यता शुल्क एवं श्रुतभक्ति दान आप ऑन लाईन जमा कर सकते है। आपकी धनराशि भेजने के लिये:-

बैंक का नाम:- इण्डियन ओवरसीज बैंक, शाखा नईसड़क उज्जैन (म.प्र.)

खाता:- श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं.:- 068002000001425 IFSC Code:- IOBA0000680

वर्ग पहेली क्रमांक-339

✽ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1	2		■	3	4		■	5
■		■	6			■	7	
8		9	■	■	10			
	■		■	11	■	■		■
■	12		■		■	13		
■		■	14		15		■	■
16			■	■	17		18	
19		■	20	21		■		■
	■	22			■	23		

बाएं से दाएं:-

1- अष्टामंगल में से एक--- (3)

3- बीस--- मानजी में श्री सिमंधरस्वामी प्रथम है (3)

6- गुजरात में भोयणी के निकट चन्दनवर्णी आदिनाथ प्रभु का तीर्थ है--- याला (3)

7- तरल का पर्याय---(2)

8- ओसियाजी के निकट चिन्तामणि पारस प्रभु का प्राचीन तीर्थ श्री गां--- र्थ (2,1)

10-गुरु गौतम स्वामी द्वारा पूछे गये प्रश्नों के प्रभु वीर द्वारा दिये गये उत्तरों का संग्रह इस ग्रंथ में श्री--- सूत्र (4)

12-जांच का समानार्थी शब्द--- क्षण (2)

13-बारह चक्रवर्ती में से प्रथम का नाम (3)

14-कर्नाटक के उडिपी जिले में स्थित भगवान नेमिनाथ का तीर्थ जहां 59 फीट उंच्चा मान स्तम्भ है--- (4)

16-बीस विहरमानजी में से एक--- नन (3)

17-वीर प्रभु की मोक्ष स्थली--- (4)

19-गहना का पर्यायवाची शब्द आभू--- (2)

20-भावी चोवीसी के तीसरे तीर्थंकर होंगे श्री --- (3)

22-कछुआ लांछन वाले तीर्थंकर प्रभु का नाम है श्री मुनि --- स्वामी (3)

23-भगवान सुविधिनाथ की जन्म स्थली--- (3)

वर्ग पहेली क्रमांक-338 का परिणाम

अ	भि	नं	■	उ	प	रि	या	ला
न	■	द	या	■	रा	■	ग	ल
न्त	■	न	र	■	स	र	■	घा
वी	णा	■	■	द	■	ना	र	■
र्य	■	■	न	मी	ना	थ	■	धा
■	■	चि	■	र	■	■	क	र्म
व	■	रा	ता	म	हा	वी	■	धु
रा	मा	■	ल	■	या	र	■	रं
ह	ला	द	न	पु	■	म	ग	धा

ऊपर से नीचे:-

2- आलीराजपुर के निकट भ.पद्मप्रभु स्वामी का तीर्थ---(3)

3- एक प्राचीन ध्यान विधि है--- (2)

4- साध्वी याकिनी महत्तरा के धर्मपुत्र के रुप में प्रसिद्ध है आचार्य---द्र सुरि (3)

5- जिनशासन की 16 सतियों में से एक है प्र--- जी (3)

7- जैसलमेर के निकट सहस्त्रफणा चिन्तामणि पार्श्वनाथ प्रभु का तीर्थ लो--- (4)

8- मेहसाणा जिले में गंभीरा पार्श्वनाथ प्रभु का तीर्थ --- (2)

9- भगवान महावीर, राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला की--- संतान थे (3)

11-भगवान अभिनंदन स्वामी का लांछन--- (3)

12-जैनियों का प्रमुख त्यौहार--- (4)

13-मंदसौर जिले के भानपुरा में बिराजे है श्री--- ड़ पार्श्वनाथ (3)

15-उज्जैन के हासामपुर तीर्थ में बिराजे है श्री अलोकि --- नाथ प्रभु (1,2)

16-राजस्थान के प्रसिद्ध केसरियाजी तीर्थ के मूलनायक है श्री--- देवजी (3)

18-राष्ट्कवि मैथिलीशरण गुप्त की कविता की पंक्तियां है-- प्रकट करती है धरती, हरित तृणों की नोंकों से मानों झूम रहे हो तरु भी, मंद पवन के झोंको से (3)

20-पन्द्रहवें तीर्थकर श्री धर्मनाथ भगवान की माता का नाम--- ता (2)

21-कहावत है होनहार बिरवान के होते चिकने--- (2)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-340

✻ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

प्रथम प्रश्न के उत्तर के अंतिम अक्षर से दूसरे प्रश्न का उत्तर आरंभ होगा।

1- उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी किसके भेद है ?
2- क्या पाने के बाद स्वप्न नहीं आते ?
3- भ.महावीर के ज्येष्ठ भ्राता ?
4- हमारे यहां सूर्य का प्रकाश नहीं आता ?
5- धर्म की आराधना का क्षेत्र ?
6- नमि राजर्षि की नगरी ?
7- एक अंतराय कर्म का भेद ?
8- भ.महावीर की पत्नी का नाम ?
9- हाथ का भूषण ? 10-मंत्राधिराज ?

वर्ग पहेली क्रमांक-339 के परिणाम

विजेताः-

1-स्नेहलता जैन, मंदसौर (म.प्र.) -प्रथम
2- कुसुम गौतम जैन, आगर (म.प्र.) - द्वितीय
3-सुधा लोढ़ा, उज्जैन (म.प्र.) - तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे-

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-339 के परिणाम

सही उत्तर-

1- अनुउचित, 2- अनुउचित, 3- उचित, 4- अनुउचित 5- अनुउचित, 6- उचित, 7- अनुउचित, 8- अउनुचित,9-उचित,10-उचित, 11- अनुउचित।

नोट- कोई भी उत्तर सही नहीं था।

✻ एक व्यक्ति एक संत के पास आया व उनसे याचना करने लगा कि वह निर्धन है। वे उसे कुछ धन आदि दे दें, ताकि वह जीविका चला सके। संत ने कहा- हमारे पास तो वस्त्र के नाम पर लंगोटी व उत्तरीय है। लंगोटी तो आवश्यक है, पर उत्तरीय तुम ले जा सकते हो। इसके अलावा और ऐसी निधि हमारे पास है नहीं। वह व्यक्ति बारबार गिड़गिड़ता ही रहा, तो वे बोले- अच्छा, झोपड़ी के पीछे एक पत्थर पड़ा होगा। कहते है, उसमें लोहे को छूकर सोना बनाया जा सकता है। तुम उसे ले जाओ। प्रसन्नचित्त वह व्यक्ति भागा व उसे लेकर आया। खुशी से चिल्ला पड़ा- महात्मन् ! यह तो पारसमणि है। आपने यह ऐसे ही फेंक दी। संत बोले- हां बेटा ! मैं जानता हूं और यह भी कि एक नरक की खान भी है। मेरे पास प्रभुकृपा से आत्मसंतोष रुपी धन है, जो मुझे निरंतर आत्मज्ञान और अधिक ज्ञान प्राप्त करने को प्रेरित करता है। मेरे लिए इस क्षणिक उपयोग की वस्तु का क्या मूल्य ? वह व्यक्ति एक टक देखता रह गया।

फेंक दी उसने भी पारसमणि। बोला- भगवन् ! जो आत्म संतोष आपको है व जो कृपा आप पर बरसी है। उससे मैं इस पत्थर के कारण वंचित नहीं होना चाहता। आप मुझे भी उस दिशा में बढ़ने की प्रेरणा दें, जो सीधे प्रभु प्राप्ति की ओर ले जाती है। संत ने उसे शिष्य के रुप में स्वीकार किया। वे दोनों मोक्ष सुख पा गए।

विवेकवान के समक्ष हर वैभव, हर संपदा तुच्छ है। वह सतत अपने चरम लक्ष्य परमपद की प्राप्ति की ओर बढ़ता रहता है।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-9-2023 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

।। श्री परमात्माय नमः ।।

शेठ नगीनचंद कपुरचंद झवेरीना प्रयासथी

जीवदया फंड

श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी

सुभाष चौक, गोपीपुरा, सुरत - 1

मो.: 09825414470 / 9820078772

स्थापना वि. सं. 1962

इ.स. 1906 रजि. नं.- 1744

PAN : AAATS8024L

पैसा भेजने का पत्ता :

प्रफुल अमीचंद झवेरी

26, खटाऊवाडी, गोरेगांवकर लेन,
सेन्ट्रल सिनेमानी पाछळ,
मुंबई - 400 004.

ऑफिस फोन : 2387 8476

मोबाईल : 98200 78772

धर्मप्रेमी सद्‌गृहस्थश्री, सादर प्रणाम !

जीवदया फंड संस्था सुरत के दानवीर शेठ श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी के प्रयासो के द्वारा स्थापित एक रजीस्टर्ड ट्रस्ट है। यह जीवदया फंड संस्था के द्वारा कतल के लीये जानेवाले ओर बीन उपयोगी जीवो को छुडवाकर के सुरत की पांजरापोल में भेजा जाता है। यह कार्य पीछले ११४ सालो से यह संस्था कर रही है । ओर शेठश्री के उत्तम पुन्यबल की वजह से यह कार्य के अंदर लगातार प्रतिवर्ष प्रगति हो रही है । जैसे की पीछले पांच सालो के दौरान (एप्रील - २०१४ से मार्च - २०१९) १०७९८ जीवो को छुडाया / बचाया गया है ।

हमारे आंगन में आनेवाले बेझुबान जीवो को पांजरापोल के अंदर ट्रस्टीओ के द्वारा नीगरानी करके सोंपा जाता है । ओर पशु के संपूर्ण जीवनकाल तक उसको संभालकर रखा जाता है ।

अनंत दया के सागर भगवान श्री महावीर प्रभु के शासन के दो स्तंभ है । अहिंसा ओर जीव के उपर मैत्री । सर्वज्ञश्री के यह संदेश को सार्थक करने के लिये दीनो का भी बहुत बडा महत्व है । जैसे की

आपके परिवार के कोई भी सभ्य का जन्मदिन

पशु परिवार के एक सभ्य को जीवनदान देकर मना सकते है ।

आपके परिवार मे आये हुए शुभ लग्नोत्सव के दीन

एक पशु युगल को जीवनदान देकर उनका जीवन उत्सवमय बना सकते है ।

कर्मसंयोग के कारन आई हुई बीमारी का दुःख ओर अशाता को टालने के लीये

कोई पशु को अभयदान प्रदान करके महाशाता का सुख प्रदान करे ।

अपने स्वजन के मृत्यु के दुःखद समय में एक पशु को

मृत्यु के मुखमें से छुडवाने से आपश्री को सांत्वना भी प्राप्त होती है ओर आपके स्वजन की सदगति प्राप्ती की प्रार्थना भी कर सकते है ।

पवित्र पर्व के धर्मोत्सव के समय एक जीवको

जीवनदान देकर पर्व उपासना को दया ओर करुणामय बनाये ।

आपश्री हंमेशा के लीये तिथि का भी चयन कर सकते है। यह तिथि के दीन दान में दी गई रकम का जो ब्याज मीलता है उसमें से जीव को छुडवाया जायेगा ।

यह संस्था के द्वारा एप्रील २०२० से मार्च २०२१ के एक वर्ष के समय जो की लोकडाउन था, उस समय में कुल २५९३ जीवो को छुडवाया गया है ।

आपश्री चेक या ड्राफ्ट जीवदया फंड के नाम का बनाए। रोकड रकम में भी आप योगदान दे सकते है। (आपश्री का अनमोल योगदान सुरत ओर मुंबई में उपर दिये गये पत्ते पर भीजवा सकते है।)

आपश्री आपका योगदान हमारे बेन्क खाते के अंदर भी जमा करवा सकते है । जीसकी जानकारी नीचे दी गई है। हमारी संस्था का 80-G नंबर AAATS 8024 LF 20210 है ।

Bank Name	: AXIS BANK LTD.	Bank Name	: BANK OF INDIA
A/c. Name	: JIVDAYA FUND	A/c. Name	: JIVDAYA FUND
IFSC	: UTIB0002274	IFSC	: BKID000001
A/c. No.	: 921010033621820	A/c. No.	: 00120100001219
Branch	: Charni Rd, Mumbai	Branch	: Mumbai Main Branch

जीवदया की शुभ भावना से कीये हुए कार्य से अक्षय सुख ओर मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है ओर नरकगति के कर्म का ओर अनेक भवो के पापो का क्षय भी जीवदया का कार्य करने से होता है। जीवदया का कार्य तीनो लोकमें श्रेष्ठ ओर सर्वोत्तम कार्य है ।

दान अेज सफल जीवन

लि. ट्रस्टीगण

प्रफुल अमीचंद झवेरी
पुष्पसेनभाई पानाचंद झवेरी
विरेन्द्र नेमचंद झवेरी

जतीनभाई फकीरचंद
शरदभाई गुलाबचंद कांटावाला
उपाकांत साकेरचंद झवेरी

बंधु बेलड़ी जैनाचार्यश्री सिद्धाचल महातीर्थ में श्रावक से श्रमण बनने की आराधना उपधान तप करायेंगे

✻ ऋण स्मरण उत्सव में आंसुओं की झड़ी लगी।

पालीताना- बंधु बेलड़ी आचार्य-द्वेय पूज्यपाद श्री जिनचंद्रसागर सूरीजी महाराजा, आचार्य देवेश श्री हेमचंद्र सागर सूरीजी महाराजा, आचार्य देवेश श्री विरागचंद्रसागर सूरीजी महाराज आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों के अंतर्गत अनेक विशिष्ट आयोजनों से मेवाड़-चैन्नई भवन में धर्माराधना का अच्छा वातावरण बन गया है । दिनांक 12 अगस्त को पूज्यपादश्री की निश्रा में ऋण स्मरण उत्सव का आयोजन किया गया जिसमें देव गुरु माता-पिता और परिवार के वरिष्ठों के साथ कैसा व्यवहार बातचीत और उनका हमारे देश धर्म और समाज को दिये गये योगदान पर आधारित भव्य आयोजन हुआ । चाणस्मा के अंकुर निकुंजभाई ने अच्छी प्रस्तुति दी। हमारे जीवन में वरिष्ठ देव गुरु और परिजनों की कितनी महत्वपूर्ण की कितनी महत्व पूर्ण भूमिका है, उनके ऋण स्वीकार पर यह आयोजन हुआ। पूज्यश्री की निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की आराधना उपधान तप का आयोजन प्रथम प्रवेश दिनांक 25 अक्टूबर तथा द्वितीय मुहूर्त 27 अक्टूबर से आरंभ हो रहा है। श्री अरिहंत मित्र मंडल, मुंबई के द्वारा आयोजित उपधान तप की माल 13 दिसंबर को होगी। 6 अगस्त को सात छट और दो अट्ठम से श्री सिद्धाचल महातीर्थ की सेवा करनेवालों का सम्मान पर रथयात्रा का आयोजन भी हुआ।

पूना में गोटीवाला श्री संघ में 270 सिद्धि तप और 10 मासक्षमण की आराधना हुई

पूना- श्री गोदीवाल ओसवाल जैन संघ में विराजित आचार्य देवेश श्री राजरत्नसूरीजी म.सा. (भगवान महाराज) आदि ठाणा-3 की अमृत निश्रा में यहां तपधर्म का ढंका बज गया है। पूज्यश्री की निश्रा में 270 सिद्धितप और 10 मासक्षमण की आराधना से संघ में तप धर्म का वातावरण बन गया है। उक्त दोनों आराधना में 10,000 हजार उपवास हुए जो इसके पारणा करनेवाले की बोली दिनांक 6 अगस्त को हुई।20 अगस्त को तपरुवीयो की सुखसाता पूछने का आयोजन हुआ पारणा महोत्सव की तैयारी चल रही है। आपश्री कर निश्रा में चार्तुमास नियमावली बुक पर नियमों का पालन करने के लिए प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। नियम चार्तुमास के पांच माह में पूर्ण करने है। विजेता को पुरस्कार राशि के साथ बहुमान किया जायेगा।

मीरपुर में महाभिषेक हुए

मीरपुर- श्री मीरपुर प्राचीन तीर्थ सिरोही राजस्थान जिले में यहां पर मुनिश्री पुण्यरत्नविजयजी म.सा. एवं मुनि श्री नयशेखरविजयजी की निश्रा में दिनांक 21 अगस्त को परमात्मा श्री नेमिनाथ प्रभु के जन्म कल्याणक पर भव्य महाभिषेक का आयोजन किया गया।

नवकार भावयात्रा का आयोजन

उज्जैन- यहां श्री हीरसूरीश्वरजी बड़ा उपाश्रय में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजित साध्वीवर्या श्री प्रियदर्शना श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वीवर्या श्री सम्यग्दर्शना श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में नवकार महामंत्र के 68 अक्षर स्वरुप नव दिवसीय नवकार भावयात्रा का आयोजन किया गया। प्रतिदिन एवं पद की यात्रा का लाभ संघपति बनाकर दिया गया। दिनांक 11 से 19 अगस्त तक आयोजित भावयात्रा में बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों की उपस्थिति रही। इसके पूर्व श्री माणिभद्र दादा का हवन भी आयोजित किया गया । स्मरण रहे आगामी अक्टूबर में पूज्य साध्वीवर्या श्री मैत्रीदर्शनाश्रीजी म.सा. को 100 वीं ओलीजी का पारणा महोत्सव भी आयोजित किया जायेगा। यह आयोजन 22 सितंबर से 2 अक्टूबर तक होगा।

जोधपुर में 14 पूर्व तप आराधना हुई

जोधपुर- श्री नंदनवन जैन श्वेतांबर श्री संघ में चार्तुमास हेतु विराजित साध्वीवर्या श्री चन्द्ररत्ना श्रीजी और बाल साध्वी श्री ध्वनिरत्ना श्रीजी का की निश्रा में यहां 14 पूर्व तप की पूर्णता निमित्त 45 आगम महापूजन पढ़ाई गई ऐसा आयोजन श्री संघ में प्रथम बार हुआ। बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों की उपस्थिति रही। यह आयोजन 6 अगस्त को हुआ। दिनांक 13 अगस्त को सिद्धितप आराधक श्री बोहरा का बहुमान किया गया।

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

मुंबई में चार्तुमास दीक्षा महोत्सव के बाद युवा जैनाचार्यश्री मालवा में अंजन-प्रतिष्ठा करायेंगे : श्री सम्मेदशिखर जाने की संभावना

जयपुर चार्तुमास भी प्रतीक्षा में है

✻ महापर्व के पूर्व पांपों का प्रायश्चित एवं पश्चाताप का झरणा पर प्रवचन हुए। श्री गिरनार महातीर्थ का इतिहास बताया गया। ✻ 17 अगस्त को मांगलिक का भव्य आयोजन महासफलता के साथ हुआ। जैन स्टोरी के द्वारा 31 अगस्त को जैन शासन के इतिहास से अवगत कराया।✻ मुंबई के 3 श्रीसंघों में गुरु नवरत्न का डंका बज रहा है। बाल मुमुक्षु तरुण 29 नवंबर को विश्व वंदनीय श्रीमहावीर का श्रमण पथ स्वीकारेंगे।✻ बाल मुमुक्षु उज्जवल अपने जीवन को उज्जवल करने के लिये 7 दिसंबर को दीक्षित होंगे। ✻ मुनिश्री उज्जवल रत्नसागरजी म.सा. गुरुपदवी पायेंगे। ✻ दीक्षा के पूर्व गृहनगर आगमन हुआ।✻ मुंबई चार्तुमास के बाद दिसंबर में मेरु महोत्सव में पूना पहुंचने की संभावना इसके बाद उज्जैन आने की संभावना। ✻ कानवन,उज्जैन-इन्दौर में नवनिर्मित होनेवाले जिन मंदिर में प्रभु की प्रतिष्ठा महोत्सव 2024 में हो सकती है।

मुंबई- श्री ठाकुरद्वार जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ में चातुमार्सिक आराधना करने करवाने के लिये पधारे मालवा के युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागरसूरीजी महाराजा परमात्मा श्री वीर प्रभु के शासन की अभिवृद्धि के लिये अपने सम्पूर्ण पुण्यबल का सुनियोजित उपयोग कर स्वयं और आपश्री ने गुरुकुल के युवा मुनिपुंग भरपूर जिन शासन की प्रभावना कर मायापुरी में जैनत्व का इतिहास रचने के लिये तत्पर बने हैं। मुंबई के तीन श्री संघों में आपश्री के साथ युवा श्रमण भगवंत अद्भूत शासन भक्ति कर युवा और वरिष्ठ धर्मिष्ठों को आकृषित कर जैनत्व का झण्डा फहरा रहे है। पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्न सागर सूरीजी महाराजा का गुरुकुल श्री वीरप्रभु के शासन को उज्जवल बनाने के लिये वर्तमानकाल में जैनत्व का शंखनाद कर रहे है। मुंबई के ठाकुरद्वार मलाड़ के राजस्थान संघ तथा लोअर परेल में कीर्तिरत्नसागरजी म.सा. के चार्तुमास मुंबई में पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल का डंका बज रहा है।

दिनांक 6 अगस्त को **''पापों का प्रायश्चित''** विषय पर रत्नाकर पच्चीसी के माध्यम से अपने पापों को पहचानने का मौका प्रवचन के द्वारा धर्मिष्ठों को मिला। दिनांक 13 अगस्त को विशिष्टआयोजनों की जैसे श्रृंखला बन गई थी। श्री गिरनार महातीर्थ के इतिहास का जानने को अपूर्व अवसर भावयात्रा के द्वारा संजय भाऊ के द्वारा धर्मिष्ठों को मिला। इसी दिन 18 पाप स्थानक को **''पश्चाताप का झरना''** के द्वारा समझाया गया। पापों से पीछे हटने के लिये हुए आयोजन को धर्मिष्ठों ने हृदयगम किया और पापों से बदलने का प्रण लिया। प्रवचनकार मुनिश्री उज्जवलसागरजी म.सा. के द्वारा जीवन जीने की कला को **''आर्ट ऑफ लिविंग''** विषय पर प्रभावी प्रवचन के द्वारा सिखाया गया। लक्की ड्रॉ का आयोजन भी हुआ।दिनांक 18 जुलाई को आपश्री की महामांगलिक में मंत्रों का दिव्य उच्चारण ग्रहण कर अनेक लोगों के जीवन में मनवांछित की पूर्ति हुई है। यह अद्भूत महामांगलिक इस कारण से विशिष्ठ बन गई कि इसी दिन उज्जवल पथ ग्रहण कर श्री वीर प्रभु की पाट परम्परा में अपना योगदान देने के लिये बाल संयमी उज्जवल गुंदेचा ने पूज्य आचार्य भगवंत से अपनी दीक्षा का मुर्हूत मांग कर वीर पथगामी बनने

का अनुरोध किया। पूज्य मुनिश्री उज्जवलरत्नसागरजी म.सा. को अपना जीवन गुरु बनाने की अभिलाषा रखनेवाले बाल मुमुक्षु श्री उज्जवल गुंदेचा को पूज्यश्री ने भावों की सुन्दर अभिव्यक्ति के साथ दीक्षा दिवस 7 दिसंबर को प्रदान किया। हर्ष से सभा मंडप गुंजमान हो गया। बाल मुमुक्षु दीक्षा पूर्व दिनांक 13 अगस्त को अपने गृहनगर माकड़ोन आये। यहां श्री संघ ने उनकी अगवानी के साथ वर्षीदान यात्रा का आयोजन किया गया। दीक्षा मुर्हूत लेने के बाद आप प्रथम बार अपने गृहनगर आये थे। एक और विशिष्टप्रसंग यह बना कि 35 कल्याणक भूमि के अध्यक्ष श्री कमलसिंहजी रामपुरिया कोलकत्ता से अपने ट्रस्ट मंडल के साथ पधारे थे। आपने पूज्यश्री से आग्रह भरी विनंती कि- 2024 में विश्व विख्यात महातीर्थ श्री सम्मेदशिखरजी के अधिष्ठायक देव श्री भौमियाजी मंदिर में प्रतिष्ठा के लिये पधारे।

मलाड़ जैन संघ में मुनिश्री उदयरत्नसागरजी एवं मुनिश्री उत्तम रत्नसागरजी म.सा.और साध्वी श्री सुरेखा श्रीजी म.सा. की निश्रा में 12 अगस्त को **''शालीभद्र का मोल''** विषय पर भव्य आयोजन हुआ।

युवा जैनाचार्यश्री की गुरुमंडली का चार्तुमास सम्पन्न होते ही मालवा की ओर प्रस्थान होगा। उज्जैन,इन्दौर में आपश्री के द्वारा जिन मंदिर की प्रतिष्ठा के साथ दिनांक 25 जनवरी को कानवन में श्री विमलनाथ परमात्मा के जीर्णोद्धार किये गये जिनालय की मंगलकारी प्रतिष्ठा गुरु पुष्य अमृत सिद्धियोग में सम्पन्न होगी। इसके बाद आपश्री आदि ठाणा का श्री सम्मेद शिखरजी की ओर मंगल विहार होगा वहां श्री भौमियाजी मंदिर में प्रतिष्ठा सम्पन्न करवाकर आपका विहार राजस्थान जयपुर में चार्तुमास के लिये होगा। लगभग यह कार्यक्रम निश्चित हो चुके है। योगायोग से परिवर्तन की संभावना से इंकार नहीं है। युवा जैनाचार्यश्री अपने गुरुकुल के युवा मुनि भगवंत प.पू. मुनि श्रीकीर्तिरत्न सागरजी म. सा. ,प.पू. मुनि श्रीतीर्थ रत्न सागर जी म. सा. प.पू. मुनि श्रीउदय रत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उत्तमरत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उज्ववलरत्न सागर जी म. सा.,प.पू. मुनि श्रीप.पू. मुनि श्रीरम्यरत्नसागरजी म.सा.,प.पू. मुनिश्रीलब्धि रत्नसागरजी म. सा. मुनिश्री शौर्यरत्न सागरजी म.सा. मुनिश्री ऋषभरत्नसागरजी म.सा .मुनि श्रीसिध्दरत्न सागरजी म.सा.आदि ठाणा युवा शिष्य मंडली के मुबंई के श्रीसंघों में शासन प्रभावना कर रहे है।

नवरत्नधाम में देश विदेश के जिनबिम्बों का अंजन अभिषेक

पालीताना- ---- निश्रा में अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई मनोज कुमार बाबूमलजी हरण के मार्गदर्शन में अंजन-अभिषेक किया गया। दिनांक 26 से 30 अगस्त तक हुए पंच कल्याणक विधान के साथ महोत्सव आयोजित हुआ। श्री शांतिस्नात्र महापूजन पढ़ाई गई।

विरतिधर्म अनुमोदना का आयोजन हुआ

सूरत- श्री आगमोद्धारक धानेरा आराधना भवन वेसु में पूज्य आचार्य श्री विजय अर्हमप्रभसूरीजी महाराज के 53 वें जन्म वर्ष पर समुह सामायिक का आयोजन किया गया। पूजारी बहुमान भी किया गया। तप बधाने का आयोजन भी हुआ।

विश्व शांति के लिये श्री नेमिनाथ परमात्मा का अभिषेक

महिदपुर- चार्तुमास हेतु विराजित सौधर्म बृहत्त तपागच्छाधिपति परम पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय जयानंद सूरीश्वरजी म.सा. के सुशिष्य परम पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय दिव्यानंद सूरीश्वरजी म.सा., पूज्य प्रवर्तक श्री वैराग्यानंदविजयजी म.सा. आदि ठाणा 8 एवं पूज्य साध्वीजी श्री अर्हमयशाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-6 के पावन सानिध्य में समर्थ गच्छाधिपति प.पू.आचार्य श्री सूर्योदयसागर सूरीश्वरजी म.सा.के दिव्याशिष व प्रवचन प्रभावक प.पू. आचार्य श्री सागरचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.की प्रेरणा मार्गदर्शन से निर्मित श्री शत्रुंजय आदिनाथ तीर्थधाम (किला जैन मंदिर) में संप्रतिकालीन 2300 वर्ष प्राचीन आदिनाथ परमात्मा की छत्राछाया में तीर्थधाम में विद्यमान गिरनार तीर्थ रचना के मूलनायक बाल ब्रह्मचारी श्री नेमिनाथ परमात्मा के जन्म कल्याणक के पुनीत पावन अवसर पर विशिष्ठ अभिषेक किये गये, जिसमें महाप्रभाव शाली स्त्रोतों के पाठ का उच्चार करते हुए प्रथम अभिषेक गिरनार तीर्थ से आये वासक्षेप से, द्वितीय अभिषेक श्री गजपद कुंड के जल से, तृतीय अभिषेक श्री शत्रुंजय नदी के जल से, चतुर्थ अभिषेक श्री सेमलियाजी तीर्थ के गुलाब जल से, पंचम अभिषेक स्वर्ण जल से, षष्ठम अभिषेक श्री गिरनार महातीर्थ की केशर से, सप्तम अभिषेक विशिष्ठ औषधियों से, अष्ठम अभिषेक पंचामृत से किया जावेगा इसके पश्चात गिरनार तीर्थ रचना के मूल नायक बाल ब्रह्मचारी श्री नेमिनाथ परमात्मा का अष्टप्रकारी पूजन एवं आरती-मंगल दीपक से किया गया।

कोढ़वा के चार्तुमास में सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपतिश्री की निश्रा में पूना की धर्म फिजा बदल रही है

संयम मेरु महोत्सव में यह आयोजन होंगे मेरु महोत्सव की भव्य तैयारियां चल रही है

✻ 50 हजार धर्मिष्ठबैठ सकें ऐसा विशाल धर्मसभा मंडप का निर्माण।

✻ चार्तुमास पूर्ण होते ही सैकड़ों साधु-साध्वी मंडल सारे देश से पूना पहुंचेंगे।

✻ 30 आचार्य भगवंत उग्रविहार कर 10 दिनों में पूना पहुंचेंगे। 100ओली का पारणा होगा।

✻ 3 आचार्य पदवी प्रदान की जावेगी।

✻ पूज्य उपाध्याय श्री वैराग्यरत्नसागरजी, पूज्य पंन्यास प्रवर श्री विरागसागरजी एवं पूज्य पंन्यास श्री दिव्यचंद्रसागरजी म.सा. 36 गुण भण्डारी पद पावेंगे।

✻ 14 दिसंबर को पदवी महोत्सव मनेगा, इसके साथ ही उपाध्याय, पंन्यास गणिपदवी भी होगी और मुनि पदवी भी होगी।

✻ 108 सुप्रसिद्ध संगीतकारों द्वारा प्रभु-गुरु भक्ति का रंग बरसेगा।

✻ आगमोद्धारक का नवंबर 2023 अंक संयम मेरुमहोत्सव विशेषांक होगा : संग्रह को संभालकर रखने का ध्यान रखें।

✻ गुजराती में निंबंध प्रतियोगिता, पत्र लेखन स्पर्द्धा, ग्रेटिंगकार्ड, स्पर्द्धा और गुजराती सुलेखन स्पर्द्धा : लाखों के ईनाम दिये जायेंगे। यादगार आयोजन में यादगार कार्यक्रम होंगे।

✻ सेना और पुलिस का बहुमान होगा।

✻ कोढ़वा जैन एकता महारैली का आयोजन 10 एवं 12 अगस्त को हुआ। जैन यूनिटी फेस्टिवल के आयोजन में 50 सोसायटी के जैनों का आगमन हुआ।

✻ युवाओं का शानदार शिविर 30 जुलाई को हुआ। जैन एकता का सिंहनाद हुआ।

✻ पूज्यपाद गच्छाधिपति के दर्शन के लिये लाईन लग रही है।

✻ पूना में धर्मचक्र महातप का भव्य शंखनाद 80 दिन का तप की पूर्णाहुति 24 सितंबर को होगी। **✻ मेरु महोत्सव का आयोजन 7 से 18 दिसंबर तक होगा। ✻ संघ हितचिंतक जैनाचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी के प्रयास की अनुमोदना।**

पूना- यहां के कोढ़वा श्री संघ में परम पावन जिनशासन की शान सागर समुदाय के जैन जगत में सर्वोच्च रुप से वरिष्ठतम संघ स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधि पति गीतार्थ मूर्धनय जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्यपाद श्री दौलत सागरसूरीजी महाराजा आदि ठाणा शताधिक संख्या में गुरु भगवंतों, साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में हजारों की जनमोदिनी की उपस्थिति में चार्तुमास प्रवेश यादगार बन गया। यहां के धर्ममय वातावरण को देखकर यह लग रहा है कि इस बार के चार्तुमास ने पूना की फि जा को बदलकर रख दिया है। चार्तुमास धर्म जाग्रति का प्रमाण बन गया है। 85 वर्ष संयम जीवन के पूर्ण होने पर एक वर्ष तक संयम मेरु महोत्सव में 8 हजार 500 जिनशासन प्रभावक कार्यों से वर्ल्ड रिकार्ड बनेगा ऐसा युग प्रभावक मेरु महोत्सव मनाने की भव्य आयोजन की तैयारी में लगे संघहित चिंतक पूज्य आचार्यदेव श्री हर्षसाग रसूरीजी म.सा. का स्वास्थ्य में अब अच्छा सुधार है सागर समुदाय के साधु भगवंतों के चार्तुमास पूना के विभिन्न संघों में हो रहे है। शताधिक साधु-साध्वी और हजारों की जनमोदिनी की उपस्थिति में धर्ममय वातावरण दिखाई दे रहा है। चार्तुमास आरंभ होते हे कोढ़वा में पोषध धर्म का शुभारंभ होगा इसके साथ ही 80 दिवसीय धर्मचक्र का भी शुभारंभ 5 जुलाई से होकर 24 सितंबर को पूर्णाहुति होगी इसके साथ ही इस बार अधिक मास होने से चार्तुमास 5 माह का होने से भी धर्म प्रभावना का जोर रहेगा। विविध तप जप के साथ अनेक आयोजन होने की श्रृंखाला बनेगी। पूज्य आचार्यश्री नंदीवर्धनसागर सूरीजी वर्तमान में स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे है।

मेरु महोत्सव- चार्तुमास उपरांत अतिभव्य रुप से ऐसा परम शासन प्रभावक पूज्यश्री का 85 वां विराट संयमोत्सव मनाया जायेगा। यह आयोजन 7-18 दिसबंर तक मनाया जायेगा कार्यक्रम को अंतिम रुप दे दिया गया है जैनत्व के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से अंकित हो ऐसा ऐतिहासिक और भव्य संयम मेरु महोत्सव मनाने के लिये संघ हित चिंतक पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हर्षसागर सूरीजी महाराजा के मन में आया और अब वह क्रियान्वित भी होने जा रहा है। पूना के श्री संघ इस संयमोत्सव के लिये जी-जान से जुड़ रहे है और तन-मन-धन से पूर्ण समर्पित जिन शासन संरक्षण हित की भावना से जाग्रत होकर तैयारी कर रहे हैं।

श्री चन्द्रप्रभ श्री संघ में जैनाचार्यश्री ने 68 तीर्थो की भाव यात्रा और श्री सरस्वती महापूजन हुई

उज्जैन-यहां के नयापुरा क्षेत्र में श्री चन्द्रप्रभस्वामी जिन मंदिर परिसर में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजित जैनाचार्य श्री मतिचंद्रसागर सूरीजी महाराज एवं मुनि श्री श्रुतचंद्र सागरजी म.सा. की निश्रा में में 68 तीर्थो की भावयात्रा का आयोजन किया गया । दिनांक 5 से 13 अगस्त तक हुई तीर्थ भावयात्रा में अलग-अलग संघपति की निश्रा में अलग-अलग तीर्थो की यात्रा करवाई गई इसके तुरन्त बाद दिनांक 14 अगस्त को बच्चों के लिये सरस्वती महापूजन तथा हवन का आयोजन किया गया। दिनांक 18 से 26 अगस्त तक महामंत्र की नव दिवसीय महामंत्र की आराधना अखण्ड जाप के साथ करवाई गई । नयापुरा क्षेत्र में किसी आचार्य भगवंत का चार्तुमास प्रथम बार होने से श्री संघ में उत्साह का वातावरण है।

ठाकुर विलेज में शाश्वत तीर्थ भावयात्रा और मातृ-पित् वंदना कर श्रीसंघ भावविभोर हुआ

मुंबई- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा के सुशिष्य चार्तुमासिक आराधना के लिये विराजित आचार्य देवेश वागड़ नरेश श्री मृदुरत्न सागरसूरीजी म. सा., उपाध्याय प्रवर श्री वैराग्यरत्न सागर जी म.सा. पू. मुनिश्री पदमरत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा -5 का आदि ठाणा की मंगल निश्रा में यहां चार्तुमास क्वांटिटी का न होकर क्वालिटीवाला हो रहा है। पूज्य आचार्य भगवंत एवं उपाध्याय भगवंत की निश्रा में इस चार्तुमास में धार्मिष्ठों को अहो जिनशासनम् का भाव म न में आ रहा है क्योंकि विगत दिनों हुई लगातार तीन रविवार को शाश्वत जिनालय की भावयात्रा से धार्मिष्ठों को ऐसी जानकारी मिली कि वे भाव विभोर हो गये इसके बाद दिनांक 13 अगस्त को मातृ-पित् वंदना के कार्यक्रम में मन भारी कर माता-पिता के हमारे जीवन में दिये योगदान को सुना, दो घंटे तक चले आयोजन को सुनकर धार्मिष्ठ आनंदित हो गये। कांदिवली में ठाकुर विलेज में पूज्य आचार्यश्री की निश्रा में 19 अगस्त को संयम भाव संवेदना का आयोजन हुआ। इसी प्रकार दिनांक 20 अगस्त को श्री सिद्धाचल महातीर्थ के बधाने का आयोजन, गिरिराज की वंदना तथा भावयात्रा का आयोजन किया गया। 127 अगस्त को तपस्वीयों की अनुमोदना मेंरथयात्रा का आयोजन हुआ।

लंदन में प्रतिष्ठा महोत्सव

मुंबई- पूज्य आचार्य भगवंत श्री नयप्रभसागरसूरीजी म.सा. के वरद हस्ते अंजनशलाका की गई। श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिष्ठा का आयोजन लंदन के जैन सेन्टर में स्थित जिनालय में किया जायेगा। दिनांक 23 से 28 अगस्त तक प्रतिष्ठा का आयोजन होगा। प्रतिष्ठा 27 अगस्त को होगी। लंदन में निर्मित जैन सेन्टर में भोजनशाला, उपाश्रय, पठन-पाठन आदि की सुन्दर व्यवस्था की गई है, यह प्रति वर्ष महापर्व पर्युषण, ओली आराधना जैसे सभी आयोजन आयोजित होंगे।

मुनिश्री विशुद्धरत्नसागरजी म.सा. नेपाल में चार्तुमास

काठमांडु- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्यदेवेश श्री नवरत्न सागर सूरीजी महाराजा के गुरुकुल के रत्न मुनिश्री विशुद्धरत्न सागरजी एवं मुनिश्री समकितरत्न सागर जी म.सा. हिमालय की यात्रा पर है, नाम के अनुरुप शुद्ध सात्विक चारित्र का पालन करने वाले मुनिश्री एकांत में रहते हुए साधना करते रहे है, मोबाईल आदि से सम्पर्क से दूर रहने वाले मुनिश्री की हिमालय के दुर्गम पर्वतों पर आराधना की है। मुनिश्री विशुद्ध रत्नसागरजी म.सा.एवं मुनिश्री समकित रत्नसागरजी म.सा. का चार्तुमास नेपाल काठमांडु में हो रहा है।

श्री नाकोड़ा भैरवधाम में महामांगलिक-उपद्यान होगा

मुंबई- राष्ट्रसंत आचार्य देवेश श्री चन्द्राननसागर सूरीश्वरजी महाराजा की महामांगलिक का आयोजन आपश्री के द्वारा संस्थापित तीर्थ श्री नाकोड़ा भैरव दर्शनधाम ठेकाले में दिनांक 18 जुलाई को भव्य आयोजन के साथ सम्पन्न हुई ।मुंबई तथा आसपास के क्षेत्र से बड़ी से बड़ी संख्या में धार्मिष्ठ श्री नाकोड़ाधाम महामांगलिक सुनने के लिये आये थे। पूज्य आचार्यश्री का चार्तुमास यही पर भव्य रुप से प्रसार हो रहा है। यहां उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। प्रथम मुर्हूत दिनांक 29 अक्टूबर तथा द्वितीय मुर्हूत दिनांक 31 अक्टूबर को है। तपस्वियों का वरघोड़ा 16 दिसंबर को निकलेगा तथा माल दिनांक 17 दिसंबर को होगी।

अहो जिनशासनम् चार्तुमास द्वारा गणिश्री ने युवाओं को जाग्रत करने का अभियान बनाया

इन्दौर-पूज्य गणिवर्य श्री आनंद सागरजी महाराज, मुनि श्री ऋषभचंद्र सागरजी म.सा. आदि ठाणा-8 के एवं साध्वी श्री सौम्ययशा श्रीजी म.सा.एवं साध्वीवर्या श्री शीलरेखाश्रीजी म.सा. साध्वी वर्या श्री हेमप्रज्ञाश्रीजी म.सा. आदि साधु-साध्वी की निश्रा में अहो जिनशासनम् चार्तुमास में गणिवर्यश्री इन्दौर के युवाओं में धर्म जाग्रति का शंखनाद कर रहे है। प्रवचन में लगभग 500 धर्मिष्ठों का आगमन हो रहा है। वर्धमान ओली आराधना के लिये बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने पाया डाल आयंबिल तपाराधना से अपना नाम जोड़ा युवाओं के लिये प्रतिदिन रात्रीकालिन युवा प्रवचन माला का आयोजन चल रहा है। विभिन्न विषयों के साथ धर्म आराधना से जुड़े सवालों का उत्तर भी युवाओं को दिया जा रहा है। दिनांक 6 अगस्त को **''हमारा मित्र कैसा हो''** इस विषय पर विशेष व्याख्यान के आयोजन के साथ से बड़ी संख्या में श्रोत व्याख्यान में आ रहे है। अन्य अनेक धर्म तप अनुष्ठान भी निरंतर चल रहे है।

पुत्र ने 5 वर्ष पूर्व फरारी कार में दीक्षा मुर्हूत लिया था अब माता-पिता जेगुआर कार में दीक्षा मुर्हूत लिया

सूरत-चार्तुमास की पूर्णाहुति होते ही दीक्षा ग्रहण करने के मंगल मुर्हूत का शुभारंभ हो जायेगा। चार्तुमास विराजित गुरु भगवंतों से आनेवाले दिनों में दीक्षा लेने, दीक्षा देने जैसे अनेक कार्यक्रमों का निर्धारण हो जायेगा। चार्तुमास पूर्ण होते ही फिर दीक्षा के कार्यक्रमों से श्री संघ में संयम का रंग चढ़ेगा। विगत दिनों यहां श्री उमरा जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ में पूज्यपाद दीक्षा-दानेश्वरी आ. श्री गुणरत्न सूरीश्वरजी म.सा. के आजीवन चरणोपासक आचार्य श्री रश्मिरत्नसूरीश्वरजी महाराज, पंन्यास हर्ष-जित-सौम्यांग दीक्षितरत्न विजय जी म.सा., गणिवर्य गौतम-सुधर्म-यश -त्रिभुवनरत्न विजयजी आदि 48 साधु भगवंतों एवं प्रवर्तिनी साध्वी श्री पुण्यरेखा श्रीजी म.सा. के शिष्या विदुषी सा.श्री मनीष रेखा श्रीजी. सा.श्री मनोज्ञरेखा श्रीजी और सा. श्री विशुद्धरेखाश्रीजी म. सा. आदि 28 साध्वीजी भगवंतों की अमृत निश्रा में हीरा व्यापारी दीपेशभाई एवं उनकी धर्मपत्नी शोभायात्रा के साथ जेगुआर कार में अपना दीक्षा मुर्हूत लेने पहुंचे, यह स्मरणीय है कि पांच वर्ष पूर्व उनके सुपुत्र भव्यशाह फरारी कार में दीक्षा मुर्हूत लेने आये थे। हीरा व्यापार दीपेश भाई के पिता श्री प्रवीणभाई वर्षों पहले बेलगांव से सूरत रहने आये थे। 10 वर्ष पूर्व दीपेशभाई के पुत्र ने 12 वर्ष की आयु में दीक्षा लेकर साध्वी परार्थ रेखा नामा पाया था और पांच वर्ष पूर्व इनके पुत्र भव्य शाह ने भी दीक्षा ग्रहण कर मुनि श्री भाग्यरत्नविजयजी नाम पाया था। अब माता-पिता दीक्षित होने जा रहे है। चार्तुमास बाद दीक्षा महोत्सव का आयोजन होगा।

मुनिश्री अजीतचंद्रसागरजी का नाम गिनीजवर्ड बुक में

मुंबई- 22 वर्षीय मुनिश्री अजीत चन्द्र सागरजी म.सा.का नाम गिनीज वर्ड बुक में दर्ज हुआ है, गिनीजबुक में नाम आनेवाले उच्च प्रथम जैन बन गये है। मार्च में 4 तारीख को आपके द्वारा महाशतावधान प्रयोग किया जावेगा। आपश्री एक मिनिट में1430 अक्षर तथा 1 सेकण्ड में 23 अक्षर बोल सकते है। मुनिश्री ने 45 आगम से 22 आगम कंठस्थ याद कर लिये है।

श्री धंटाकर्ण महावीरजी का अनुष्ठान

बैंगलोर- पूज्य आचार्य श्री विमलसागरसूरीजी महाराज एवं गणिवर्य श्री पद्मविमलसागरजी म.सा. आदि साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में यहां श्री शीतलनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर परिसर में श्री अरिहंत प्रभु और गुरु तत्व के पूजनयुक्त श्री घंटाकर्ण महावीर देव श्री का अनुष्ठान का आयोजन 20 अगस्त को किया गया।

अट्ठम तपाराधना हुई

मुबंई- श्री श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ, श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिन मंदिर में अट्ठम तप का आयोजन किया गया। पूज्य आचार्यश्री महानंदसूरीजी महाराज, मुनिश्री अभिषेकविजयजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में तपाराधना 20 से 24 अगस्त तक हुई। 21 से 23 अगस्त तक अट्ठम हुए इसके साथ ही आपश्री की निश्रा में नेम रस उत्सव का आयोजन दिनांक 20 अगस्त को किया गया। श्री नेमीनाथ प्रभु के जन्म-दीक्षा कल्याणक पर त्रिदिवसीय महोत्सव मनाया गया।

पालीताना में जैनाचार्यश्री जिनोत्तमसूरीजी की निश्रा में उपधान-अंजन-प्रतिष्ठा संघ के आयोजन होंगे

पालीताना- पूज्य आचार्य श्री सुशीलसूरीजी कृपापात्र जैनाचार्य श्री जिनोत्तमसूरीजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में इस वर्ष चार्तुमास आराधना के साथ उपधान-तप-अंजन प्रतिष्ठा-12 गांव का संघ अयोध्यापुरम् से पालीताना संघ आदि आयोजन होने जा रहे है। अन्य नगरों में प्रतिष्ठा होने के साथ चैत्र माह की नवपद ओली आराधना श्री नाकोड़ा महातीर्थ में होगी।

नवसारी में तप का इतिहास रचा गया

नवसारी- पूज्यपाद आचार्यदेवेश श्री रत्नचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. तथा आचार्य देवेश श्री विजय उदयरत्न सूरीश्वरजी म.सा., साध्वीश्री गुणयशा श्रीजी म.सा.आदि साधु-साध्वीजी की निश्रा में यह मासक्षमण तप का इतिहास का सर्जन हुआ। 30 घर के संघ में 1500 लोगों ने मासक्षमण की भावना से पच्चखाण के लिये शुरु में 300 धार्मिष्ठों ने 16 उपवास के 75 पच्चखाण, 9 उपवास के 30 तथा उपवास के 150 से अधिक धर्मिष्ठों ने पच्चखाण लेकर जैन पर्व का ढंका बजा दिया है।

आगामी चार्तुमास की जय बोलाई गई

मुंबई- यहां के विलेपार्ले श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ की आग्रहभरी विनंती पर पूज्य आचार्य देवेश श्री अक्षयबोधि सूरीजी तथा आचार्यदेव श्री महा बोधि सूरीजी महाराज का आगामी वि.सं. 2080 ईस्वी सन् 2024 का चार्तुमास विलेपार्ले श्री संघ में करेंगे। संघ में चार्तुमास की घोषणा से हर्ष छा गया।

श्री मणिभद्रवीर का महापूजन हवन हुआ

इन्दौर- श्री शीतलनाथ जैन मंदिर में पूज्य आचार्यदेव श्री वीररत्न सूरीजी म.सा. के स्मरणार्थ श्री मणिभद्रवीर का महापूजन और हवन का आयोजन दिनांक 7 सितंबर को किया गया। महापूजन साध्वी श्री सुधाशनाश्रीजी एवं साध्वीश्री मुक्तिनिलयाश्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में हुआ। यह आयोजन 27 जोड़ें के साथ हुआ।

अगाशी तीर्थ में उपधान तप

अगाशी- परम परमात्मा श्री मुनिसुव्रतस्वामी प्रभु से महिमा मंडित श्री अगाशी तीर्थ विरार (वेस्ट) में उपधान तप होने जा रहा है। राजग्रही तीर्थ प्रेरक आचार्य देवेश श्री अक्षयचन्द्र सागरसूरीजी म.सा., पूज्य प्रर्वतक श्री नयशेखरसागरजी म.सा. एवं साध्वी-वर्या श्री भव्यज्ञाश्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में प्रथम मुर्हूत दिनांक 20 दिसंबर तथा द्वितीय मुर्हूत 21 दिसंबर से उपधान का शुभारंभ होगा। उपधान तप का मालारोपण दिनांक 8 फरवरी 2024 को होगा।

जम्बुस्वामी चरित्र पर नाटिका और वर्धमान शक्रस्तव महाभिषेक हुए

मुंबई- पूज्यपाद कलापूर्णसूरीजी महाराजा के सुशिष्य पूज्यपाद जैनाचार्य श्री पूर्णचंद्रसूरीश्वरजी महाराजा आदि साधु-साध्वी भगवंतों आदि ठाणा की अमृत निश्रा में यहां चार्तुमास के अंतर्गत विशिष्टधर्मोत्सव का आयोजन से धर्म जाग्रति का वातावरण बन गया है। विगत दिनांक 13 अगस्त को श्री जम्बुस्वामी चारित्र पर भव्य नाटिका का आयोजन किया गया। आपने अपने जीवन में 526 व्यक्तियों को वैराग्य के पथ पर आगे बढ़ाया। आपश्री सुधर्मास्वामीजी के पट्टधर सुशिष्य थे। दिनांक 10 अगस्त को पूज्य साध्वीवर्या श्री इन्दु वंदिताश्रीजी को वर्धमान आयंबिल तप की 90 वीं ओलीजी के पूर्णाहुति प्रसंग पर पारणोत्सव का आयोजन हुआ। दिनांक 13 अगस्त को श्री वर्धमान शक्र स्तव महाभिषेक का आयोजन किया गया जो दो घंटे तक चला। श्री नेमनाथ प्रभु के जन्म दीक्षा कल्याणक महोत्सव मनाने के साथ ही सामुहिक अट्ठम तप एवं सिद्धि तप की पूर्णाहुति दिनांक 27 अगस्त को होगी।

श्री 108 पार्श्वनाथ महापूजन पढ़ाई गई

कलकत्ता- हंसपुरकर में श्री वर्धमान जैन श्री संघ में गच्छाधिपति पूज्य आचार्य श्री मुक्तिप्रभसूरीजी महाराज, आचार्यदेव डॉ. विनीतप्रभ सूरीजी महाराज आदि साधु-साध्वी की निश्रा में दिनांक 27 अगस्त को श्री पार्श्वनाथ महापूजन पढ़ाई गई।

श्री गिरनार महातीर्थ की नव्वांणु यात्रा

गिरनार- पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री चन्द्रशेखर सूरीश्वरजी महाराज के सुशिष्य आचार्यदेव श्री धर्मरक्षित सूरीश्वरजी के सुशिष्य आचार्य देव श्री हेमवल्लभ सूरीश्वरजी की निश्रा में श्री गिरनार महातीर्थ की भव्यता से नव्वांणु यात्रा का आयोजन होने जा रहा है। आयोजन की रुपरेखा के बारे में शीघ्र घोषणा होगी।

मालवा की प्रथम साध्वीवर्या श्री मनोहरश्रीजी म.सा.की पुस्तक का विमोचन जम्बुदीप संरक्षक की निश्रा में हुआ

✻ 400 धर्मिष्ठों की उपस्थिति रही।
✻ दिसंबर में मंदसौर में अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव होगा।
✻ पौष दशमी आराधना श्री नागेश्वर तीर्थ में करवायेंगे।

नागेश्वर- मांडवगढ़ तीर्थोद्धारक सिद्धचक्र आराधक समाज मार्गदर्शक पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री अशोकसागरसूरीजी महाराजा आचार्य देवेश श्री सौम्यचंदसागरसूरीजी म.सा. आचार्य श्री विवेकचंद्रसागरसूरीजी म.सा. प्रर्वतक श्रीधैर्यचंद्रसागरजी म.सा.आदि ठाणा के साथ पूज्य साध्वीवर्या श्री चारुधर्माश्रीजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में दिनांक 17 अगस्त को भव्य पुस्तक विमोचन हुआ। पूज्य साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. सुशिष्या साध्वीवर्या श्री चारुधर्माश्रीजी म.सा. के द्वारा लिखित एवं डॉ. सुभाष जैन आगमोद्धारक के द्वारा सम्पादित पुस्तक ''मनोहर'' के विमोचन का प्रसंग था। पूज्य आचार्यश्री ने साध्वीवर्याश्री के योगदान को यादगार बतलाया वहीं प्रवर्तक श्री धैर्यचंद्र सागरजी म.सा. ने मनोहरश्रीजी म.सा. के योगदान की विवेचना की। आचार्यश्री विवेकचंद्र सागर सूरीजी ने भी प्रासंगिक वक्तव्य दिया। डॉ. सुभाष जैन ने सागर समुदाय के मालवा में योगदान पर ओजस्वी वाणी में विस्तार से चर्चा की। श्री नागेश्वर तीर्थ के सचिव श्री धर्मचंद्रजी और सूरत से पधारे श्री विमलजी बाडासिया ने संयुक्त रुप से पुस्तक विमोचन किया। इस अवसर पर डॉ. सुभाष जैन आगमोद्धारक को पूज्यश्री की निश्रा में श्री नागेश्वर पेढ़ी के द्वारा सम्मानित किया गया। साध्वीवर्या श्री दमिता श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री नागेश्वर तीर्थ में हो रहा है मन्दसौर में परमात्मा श्री पार्श्वनाथ प्रभु की अंजन प्रतिष्ठा श्री आर्य दीक्षित सूरी तीर्थधाम मंदसौर में दिसबंर में होगी।

आचार्यश्री हंसरत्नसूरीजी महाभद्र तप कर रहे है

मुंबई- यहां चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजित महातपस्वी आचार्य भगवंत श्री हंसरत्नसूरीश्वरजी महाराजा जिन्होंने पूर्व में 18 उपवास किये थे अब आपश्री महाभद्र तप की आराधना का शुभारंभ दिनांक 25 जुलाई से करेंगे। महाभद्र तप की प्रथमबारी की शुरुवात होगी। इस महोत्सव में कुल 245 दिवस 196 उपवास और 99 बियासणा आयेंगे। पहली बारी में 28 उपवास तथा सात बियासणे आयेंगे। यह आराधना 35 दिन की रहेगी।

भवानीमंडी चार्तुमास में अध्यात्म और धर्माराधना के साथ संयम उद्घोषणा का रंग जमा

भवानीमंडी- पूज्यपाद गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागर जी म.सा.गणिवर्य श्री अक्षतरत्नसागर जी म.सा.आदि ठाणा श्रमण-श्रमणी वृंद की निश्रा मे चार्तुमास में विविध धार्मिक अनुष्ठान तप, जप के साथ संयम की उद्घोषणा से अध्यात्म के रंग में रंग गया है। **''ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम माहरो और न चाहू रे कंत''** के माध्यम से दोस्ती पर विशेष प्रवचन का आयोजन दिनांक 6 अगस्त को किया गया। महामांगलिक में दिनांक 17 अगस्त को बांजना निवासी पूजा बाफना को पूज्य गणिवर्यश्री ने संयम मार्ग पर आगे बढ़ने के लिये दीक्षा का मुर्हूत **दिनांक** 14 **फरवरी** प्रदान किया **गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी म.सा. की निश्रा में दीक्षा बांजना में होगी** इसके साथ ही श्री नेमिनाथ प्रभु के जन्म दीक्षा कल्याणक के निमित्त दिनांक 21 अगस्त को विशाल मेरु पर्वत पर 64 इन्द्र और 56 दिक्कुमारियों के साथ परमात्मा का जन्म कल्याणक मनाने के लिये भव्य स्नात्र महोत्सव का आयोजन किया गया। दिनांक 15 अगस्त को मेरा भारत महान कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

चंदनबाला के अट्ठम तप का आयोजन

सूरत- श्री आगमोद्धारक धानेरा आराधना भवन में विराजित पूज्य जैनाचार्य श्री विजय अर्हमप्रभ सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में चंदनबाला के अट्ठम तप का आयोजन दिनांक 24 से 26 अगस्त तक हुए भव्य पारणा 28 अगस्त को हुआ उसके पहले दिनांक 23 अगस्त को आराधकों को उत्तर पारणा भी करवाया गया। संघ में अन्य आराधना चल रही है।

वाणी में जादूगर जैनाचार्यश्री के प्रवचन जीवन परिवर्तन का संदेश दे रहे है

✻ मुनिपुग श्री ज्ञानेशरत्नसागरजी को 40 वां वर्धमान ओली पूर्ण हुई।

पूना- वर्धमान नगर में चार्तुमासिक आराधना के लिये विराजमान जैनाचार्य वाणी के जादूगर पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरीजी महाराज मुनिश्रीचैत्यरत्नसागर जी मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनि श्री गोयमसागरजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में यहां अपनी विशिष्ट शैली और हास्य के पुट के साथ दिये गये जा रहे प्रवचन को सुन धर्मिष्ठों के जीवन की दशा और दिशा में परिवर्तन हो रहा है। पूज्य जैनाचार्यश्री के द्वारा **''आर्यावृत की आदर्श संस्कृति''**और स्वतंत्राता दिवस पर **''आजादी या बर्बादी''** पर प्रवचन को सुनकर देश धर्म और समाज के प्रति जाग्रति का भाव मन में ला रहे है। मारवाड़ी क्षेत्र के धर्मिष्ठों को हिन्दी भाषा में प्रवचन गले उतर रहे है। पूज्य युवा वैयावच्च प्रेमी मुनि भगवंत श्री ज्ञानेशरत्नसागरजी म.सा. को विगत दिनों वर्धमान तप की 40 वीं ओली की पूर्णाहुति पर अनुमोदना सभा का आयोजन किया गया। आयंबिल आराधक पूज्य आचार्य देवेश श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीश्वरजी महाराज पूज्यपाद गच्छाधिपति की सेवा में निरंतर कार्यरत है।

उज्जैन में विभिन्न तप, जप और अनुष्ठान के बाद महामंत्र की नवदिवसीय आराधना

✻ साध्वीश्री राजिताश्रीजी को 85 ओली पारणा महोत्सव बनेगा।

उज्जैन- श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर विराजित पूज्य साध्वीवर्या श्री सौम्यवंदना श्रीजी, श्री राजिताश्रीजी एवं प्रवचनपुर साध्वी श्री नर्मिताश्रीजी आदि ठाणा-5 का चार्तुमासिक धर्माराधना में विभिन्न तप और जप के साथ अनुष्ठान सम्पन्न हो रहे है। विगत दिनों यहां श्री माणिभद्रवीर तपागच्छ नायक की पूजन अनुष्ठान के साथ थाल चढ़ाया गया। दिनांक 15 अगस्त को आजादी पर प्रवचन तथा क डगुरु मुनि के आयंबिल भी हुए, लगभग 50 आराधकों ने आयंबिल किये, पुष्प नक्षात्र होने से श्री महाक्ष्मी पूजन भी हुई। दिनांक 18 अगस्त से महामंत्र नवकार की मांत्रिक क्रिया के साथ अनुष्ठान हुए जो नव दिवस तक चले। निगोद निवारण तप, आत्मा का बाजार, श्री शंखेश्वर प्रभु के अट्ठम तप के साथ अट्ठम तप और आयंबिल की श्रृंखला चल रही है। साध्वीश्री राजिताश्रीजी को वर्धमान तप की 85 वीं ओली का पारणा त्रिदिवसीय महोत्सव के साथ मनाने की तैयारी चल रही है।

हाईडपार्क टेम्पल में 108 प्रदक्षिणा का आयोजन

पूना- हाईडपार्क टेम्पल श्री संघ में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजित साध्वीवर्या पूज्य श्री सौम्यरत्ना श्रीजी म.सा.आदि ठाणा-4 की निश्रा में 108 प्रदक्षिणा का महत्वपूर्ण आयोजन संगीत के साथ किया गया। यह आयोजन 6 अगस्त को किया गया।

रतलाम में सामुहिक अट्ठम तप का आयोजन

रतलाम- श्री देवसूर तपागच्छ चारथुई जैन श्री संघ गुजराती उपाश्रय में विराजित पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री विजयकुलबोधि सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा में सामूहिक अट्ठम तपराधना का आयोजन 19 से 21 अगस्त तक किया गया। 18 अगस्त को सभी तपस्वी आराधकों धारणा भी करवाया गया। इन तीन दिनों में 19 अगस्त को ''दशा नहीं दिशा बदले'' पर पूज्यश्री के सार्थक प्रवचन के साथ सामूहिक पच्चखाण करवाये गये। 20 अगस्त को श्री शंखेश्वर वंदनावली तथा श्री कुमारपाल राजा की महाआरती हुई। 21 अगस्त को श्री गिरनार महातीर्थ की भावयात्रा करवाई गई। अट्ठम तप का लाभ बोहरा परिवार ने लिया। इसके साथ ही पूज्यश्री की प्रेरणा से 280 आराधकों ने वर्धमान तप ओली का पाया भी डाला है।

45 आगम शास्त्र विमोचन महोत्सव

जामनगर- सागर की शान पूज्यपाद श्रुत स्थविर डॉ. दीपरत्न सागरजी महाराज 702 पुस्तकों के सर्जक है, आपके द्वारा संशोधित-सम्पादित 45 मूल आगम, 4 वैकल्पिक आगम, कल्पसूत्र मूल और 50 पुस्तक के 21 भाग का प्रस्तुतिकरण आदि के 45 आगमग्रंथों का विमोचन महोत्सव का कार्यक्रम 20 अगस्त को सम्पन्न हुआ। आपश्री आगम दिवाकर और श्रुतमर्हिषी पदवी से अलंकृत है, इन सभी ग्रंथों के एक सेट का वजन लगभग 21 किलो का है।

मुनिश्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. का 100 ओली का पारणा श्री संघ के आग्रह पर गृहनगर में होने की संभावना

✻ तपस्वी मुनि श्री पद्मकीर्तिसागरजी को 99 वीं ओली 24 यितबंर करे पूर्ण होगी

पूना- आराधना भवन लेक टाउन सिटी में चार्तुमास के लिये विराजित सागर समुदाय के वरिष्ठ जैनाचार्य पूज्यपाद वचनसिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराजा एवं आयंबिल तपाराधक मुनिराज श्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में बच्चों के लिये बाल शिविर का आयोजन किया गया । शिविर में ध्यान, तत्वबोध धर्मकथा, स्तुति, स्तवन, गेम आदि के माध्यम से बच्चों को जैन धर्म से अवगत कराया गया। बड़ी संख्या में बच्चों ने शिविर में भाग लिया ।पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. क100 वी ओली जी का पारणा गृहनगर मे होने की संभावना है। उज्ञैन में 120 आराधकों को वर्षीतप की आराधना भी चल रही है । **वर्षीतप आराधना के मुख्य लाभार्थी बनने का सौभाग्य डॉ. सुभाष जैन, आगमोद्धारक परिवार को मिला । यह आराधना वचनसिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराज की प्रेरणा मार्गदर्शन में हो रहा है ।**पूज्यपादश्री की अमृत निश्रा में यहां अभी तक अनेक विशिष्ट आयोजन हुए जिसमें सिद्धचक्र महापूजन, संघ में सिद्धतप और धर्मचक्र तप भी चल रहा है। श्री सिद्धाचल की भावयात्रा का आयोजन हुआ। मुनिपुंग वैय्यावच्च प्रेमी श्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. को 99 वीं ओलीजी शातापूर्वक चल रही है । 99 वीं ओलीजी की पूर्णाहुति भादवा सुदी-10 दिनांक 24 सितंबर को होगी । पारणा महोत्सव आयोजित होगा । महापर्व पर्युषण के उपरांत पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन विविध तप-जप आराधना अनुष्ठान निमित्त होगा । भक्तामर, शांतिस्नात्र महापूजन पढ़ाई जायेगी। परमात्मा के 18 अभिषेक भी होंगे।

पूज्य साध्वीवर्या श्री भव्यज्ञानीश्री को एकासणा तथा साध्वी श्री मृदुदर्शिता श्रीजी को 68-69 वीं वर्धमान तप ओली चल रही है। साध्वी श्री नंदीप्रिया श्रीजी एवं साध्वी श्री निधिक्रिया श्रीजी को धर्मचक्र तप चल रहा है।

मुनिश्री शौर्यरत्न विजयजी के 36 उपवास पर वरघोड़ा निकला

इन्दौर- तिलकेश्वर पार्श्वनाथ गुरुवार को मुनिराज शौर्य महाराज के 36 वें उपवास व सारिक माताजी को मासक्षमण के पारणा अवसर पर वरघोड़ा निकाला गया। श्रीविजय पद्म भूषण रत्नसूरीश्वरजी ने मांगलिक श्रवण करवाई । महाराज को कमली वोहराई गई। वरघोड़े में मासक्षमण एवं बीस विहरमान के तपस्वी बग्घी में विराजमान थे । श्रीपद्मभूषणरत्न सूरीश्वरजी महाराज साध्वीवर्याश्री, भक्तिरेखा श्रीजी साधु-साध्वी वरघोड़े में शामिल हुए । श्रावक मुनिराज की पालकी अपने कांधे पर लेकर चल रहे थे। वरघोड़ा तिलक नगर के विभिन्न मार्गो से होता हुआ महावीर नगर पहुंचा । यहां धर्मसभा में तपस्वी के सम्मान में विचार व्यक्त किये । श्रीऋषभ रत्नविजय महाराज के तपस्वियों के बहुमान में प्रवचन हुवे एवं श्रीसंघ की नवकारसी हुई।

श्री अभ्युदयपुरम् में श्री सम्मेदशिखरजी महातीर्थ का निर्माण

पूना- पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री अभ्युदयसागरजी महाराज के सुशिष्य पूज्य आचार्यदेव श्रीजैनाचार्य श्री मुक्तिसागरसूरीजी एवं आचार्य देव श्री अंचलमुक्तिसागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा में उज्जैन में निर्मित तीर्थ श्री अभ्युदयपुरम् में श्री सम्मेदशिखर महातीर्थ का निर्माण किया जायेगा। जल मंदिर भोमियाजी मंदिर 20 तीर्थंकर तथा श्री गौतम स्वामीजी की देहरी का निर्माण होगा इसके साथ ही तीर्थ विकास के लिये अनेक योजनाएं बनाई गई है। आपका आगामी चार्तुमास श्री अर्बुजगिरी जैन श्वेतांबर उपाश्रय इन्दौर में होने की घोषणा की गई है।

स्वतंत्राता की पूर्व संध्या पर भव्य आयोजन हुआ

चैन्नई-श्री शांति वल्लभ तुम्बिर्नी जैन संघ के तत्वावधान में दिनांक 13 अगस्त को स्वतंत्राता की पूर्व संध्या पर आजादी का महोत्सव मनाया गया । पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री वर्धमान सागर सूरीश्वरजी महाराजा की निश्रा में इस आयोजन को गणिवर्य श्री कल्याणपद्मसागरजी म.सा.ने विशेष रुप से योगदान देते हुए स्वतंत्राता को सुन्दर रुप से प्रस्तुत किया । विशेष अतिथि के रुप में एयर मार्शल श्री सिमकुट्टीजी का आगमन हुआ था। इसके साथ ही श्रीमती शोभा जैन भारतीय एयर फोर्स के पायलेट श्री अभिनंदनजी की माताजी का आगमन हुआ था।

जिनशासन के तप की ध्वजा बड़ोदा में लहराई 450 मासक्षमण का महापारणा संपंन

बड़ोदा-श्री अलकापुरी जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराज मान युगदिवाकर आचार्य देवेश श्री धर्मसूरीश्वरजी महाराजा के साम्राज्य को आगे बढ़ानेवाले तप प्रभावना करने वाले पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री राजरत्न सूरीश्वरजी महाराज तथा आचार्य भगवंत श्री आगमरत्न सूरीजी महाराज आदि साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में बड़ोदा में जैन जगत के मासक्षमण तप के इतिहास का अमृत सृजन हुआ। पूज्यश्री की अमृतमय वाणी से जीवन परिवर्तन की और लौटते जैन युवाओं और युवतियों ने महातप मासक्षमण की आराधना 450 की संख्या में कर जैन जगत में तप का इतिहास बना दिया। इस महातप मं 7 से 11 वर्ष वय के 12 बच्चों ने मासक्षमण कर परमात्मा के शासन को इस चार्तुमास में अमूल्य भेंट दी है। सभी मासक्षमण तपस्वीयों के साथ यह भी गौरवपूर्ण है कि 1700 धर्मिष्ठों, बच्चे-युवा प्रौढ़, बुजुर्गो ने अट्ठम तप का एक अविस्मरणीय योगदान परमात्मा श्री वीरप्रभु के शासन को आगे बढ़ने दिया। सच में तो अनुमोदना के लिये शब्द नहीं मिलतेहै। सभी तपस्वीयों की भव्याति भव्य शोभायात्रा 30 अगस्त को आयोजित हुई जिसमें सम्पूर्ण जैन जगत के लोगों का जमघट लग गया। सभी तपस्वियों का सामुहिक पारणा 11 अगस्त को सम्पन्न हुआ। प्रभावती बहन, शांतिलाल शाह परिवार, पालेज वाला परिवार ने पारणा कराने का लाभ लिया। इसी परिवार में 5 लोगों ने भी मासक्षमण किया था।

18 स्थानक संवेदना और मुनि भगवंत की तपाराधना से चार्तुमास में चार चांद लग गये

मुंबई- श्री शांतिनाथ जिनालय दादर में चार्तुमास हेतु विराजित पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री रविदेवसूरीजी महाराज एवं पूज्य मुनि श्री प्रियरत्न विजयजी एवं मुनिश्री आगमप्रिय विजयजी म.सा.आदि साधु-साध्वी की निश्रा में यहां विविध धार्म, तप-आराधना के साथ चार्तुमास आगे बढ़ रहा है। दिनांक 6 अगस्त को 18 पाप संवेदना आयोजन अच्छा रहा। **''आ पापमय संसार छोड़ी श्रमण हुं क्यारे बनुं''** पर पूज्यश्री का व्याख्यान हुआ। पाठशाला के बच्चे ने भी अच्छी प्रस्तुति दी। यहां मुनिश्री प्रियरत्नविजयजी म.सा.को भगवती सूत्र योगद्वहन साधना चल रही है। आगे आपश्री को गणि पदवी प्रदान होना है। मुनिश्री आचारंगप्रियविजयजी म.सा. को 25 वर्ष की आयु में 46 वीं ओलीजी चल रही है। पारणा 27 अगस्त को हुआ। साध्वी श्री योगरुचिश्रीजी म.सा. को सिद्धितप की आराधना चल रही है। 36 उपवास और 8 बियासणा के बाद पारणा 27 अगस्त को हुआ।

❊ ज्ञानी पुरुष के वचन का जिसे दृढ़ आश्रय हो उसे सर्व साधन सुलभ हो जाय, ऐसा अखण्ड निश्चय सत्पुरुषों ने किया है।

श्री गिरनार महातीर्थ का संघ निकलेगा

जेतपुर- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय जगतचंद्रसूरीजी महाराजा आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में जेतपुर से श्री गिरनार महातीर्थ का छःरि पालित यात्रा संघ का आयोजन होने जा रहा है। संघ का प्रस्थान कलकत्ता से 10 जनवरी 2024 को होकर पदयात्रा 13 जनवरी 2024 से जेतपुर से आरंभ होगी। गिरनार 16 जनवरी को संघ पहुंचने के बाद 17 जनवरी को संघ माल होगी।

सुवासरा में मासक्षमण हुआ

सुवासरा-यहां चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजित साध्वीवर्या श्री सिद्धांतज्योति श्रीजी म.सा.आदि ठाणा-5की निश्रा में युवा श्रावक श्री हर्षचन्द्रगौत्रीय ने मासक्षमण का तप किया। दिनांक 4 से 6 अगस्त तक त्रिदिवसीय महोत्सव, चौबीसीगान तपस्वी का बहुमान एवं शोभायात्रा का आयोजन किया गया। 18 पाप स्थानक पूजन का आयोजन तथा साधुपद के एकासणा भी हुए।

आयंबिल तप की 100+40 ओली पारणा हुआ

नागपुर- श्री संभवनाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ वर्धमान नगर में चातुमार्सिक आराधना के लिये विराजमान सागर समुदाय की साध्वी वर्या श्री अक्षयज्योति श्रीजी का 100 +40 वीं वर्धमान तप ओलीजी का पारणा विगत दिनों उत्साह से सम्पन्न हुआ। चातुमार्सिक प्रवचन तथा अन्य धार्मिक आयोजन में बड़ी संख्या में धार्मिष्ठों की उपस्थिति हो रही है।

नाकोड़ा में उपधान तप के साथ नव्वांणु यात्रा का महायोजन

नाकोड़ा- पूज्य आचार्यदेवेश श्री नयचंद्रसागरसूरीजी महाराजा के शिष्यरत्न मुनिश्री सुमितचंद्रसागरजी और मुनिश्री शीतलचंद्रसागरजी महाराज आदि साधु साध्वी की निश्रा में यहां उपधान तप का भव्य आयोजन प्रथम मुहूर्त दिनांक 7 और 9 दिसंबर तथा द्वितीय मुहूर्त 14 एवं 16 दिसंबर के साथ आरंभ होने जा रहा है। उपधान तप के तपस्वीयों की भव्य शोभायात्रा तथा मालारोपण का आयोजन दिनांक 25 जनवरी 2024 को होगा। बच्चों के लिये 18 दिवसीय उपधान का आयोजन दिनांक 23 दिसंबर से होगा। नव्वांणु यात्रा नाकोड़ा तीर्थ में पीछे की ओर बने 500 सीढ़ियां ऊपर विराजित श्री नेमि, पार्श्व एवं श्री शांतिप्रभु की यात्रा के साथ कराई जायेगी।

बंधु त्रिपुटी श्री सिद्धाचल महातीर्थ में आत्मलक्ष्मी उपधान तप करवायेंगे

पालीताना- जैनाचार्य अपूर्व मंगल रत्नसागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल के बंधु त्रिपुटी मुनि प्रवर श्री आगम प्रश्म- व्रजरत्नसागरजी म.सा. आदि साधु-साध्वी की निश्रा में आत्मलक्ष्मी उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। उपधान तप में प्रथम प्रवेश का मुहूर्त दिनांक 30 अक्टूबर तथा द्वितीय प्रवेश दिनांक 1 नवंबर को होगा। उपधान तप के तपस्वियों की शोभायात्रा तथा रथयात्रा का आयोजन दिनांक 16 दिसंबर को होगा। उपधान तप की मोक्षमाला दिनांक 17 दिसंबर को होगी। प्रथम उपधानवाले को सोने की चैन, दूसरे उपधान तप वाले को सोने की गिल्ली, तीसरे उपधान तपवाले को विशिष्ट बहुमान होगा। उपधान तपस्वियों को कांसे की थाली तथा उपकरणों की कीट दी जायेगी। उपधान स्वामी धर्मशाला में होगा। नवरत्नधाम में बंधु त्रिटी की निश्रा में दिनांक 20 से 22 अगस्त तक नेमिनाथ परमात्मा के जन्म दीक्षा कल्याणक पर त्रिदिवसीय आयोजन में श्री ऋषिमंडल श्री भक्तामर महापूजन का आयोजन किया गया साथ ही जय तलेटी पर 18 अभिषेक का आयोजन किया गया। मार्ग दर्शन अंतर्राष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई मनोजकुमारजी हरण का रहा।

अंधेरी में विरती उत्सव मनाया गया

मुंबई- श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ के अन्तर्गत श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन मंदिर परिसर में आचार्यश्री महानंद सूरीजी महाराजा, मुनिश्री अभिषेक विजयजी म.सा.आदि ठाणा एवं साध्वी श्री शीलधर्मा श्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में विरती उत्सव का आयोजन किया गया। दिनांक 13 अगस्त को हुए गोचरी पोषध उत्सव का आयोजन प्रातः 6 बजे से हुआ। इस आयोजन में बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविका की उपस्थिति रही।

*** हे जीव ! इस क्लेशरुप संसार से निवृत्त हो, निवृत्त हो।**

23000 हजार आयंबिल पारणा अनुमोदना

मुंबई- श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ मूर्तिपूजक श्री संघ बाबुलनाथ में विराजित गणिवर्य श्री तीर्थचंद्रसागरजी म.सा. की 99 वीं ओलीजी मुनिश्री वैराग्यचंद्रसागरजी की 74 वीं ओलीजी तथा साध्वी श्री कल्पबोधश्रीजी म.सा. की 100+100+100+13 ओली के 23000 हजार आयंबिल के पारणा की अनुमोदना का आयोजन पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री सागरचंद्रसागर सूरीजी महाराज की निश्रा में 15 से 17 अगस्त तक मनाया गया। दिनांक 15 अगस्त को सामूहिक आयंबिल के साथ जैन शहीदों को आदरांजलि दी गई। 16 अगस्त को 12 तप नाटिका पूजन संवेदना का आयोजन तथा 17 अगस्त को पानी में तैरते परमात्मा की प्रतिमा का अखाण्ड अभिषेक तथा तपस्वीयों के पारणा एवं पगलिया का आयोजन हुआ।

श्री वीर गौतम उपधान तप का आयोजन

विजयवाड़ा- श्री अरिहंतधाम गुंटुंवल्ली के श्री संभवनाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ में पूज्यपाद मुनिश्री श्री गुणहंसविजयजी महाराज आदि साधु-साध्वी ठाणा-10 की निश्रा में श्री वीर गौतम उपधान तपाराधना होने जा रही है। उपधान में प्रवेश का प्रथम मुर्हूत दिनांक 1 सितंबर तथा दूसरा मुर्हूत दिनांक 3 दिसंबर को है। उपधान तप की मोक्ष माला दिनांक 19 जनवरी को होगी। उपधान तप आयोजक श्री सोलंकी परिवार है।

अरिहंत उपासक और लब्धि कलश अनुष्ठान हुआ, गणिपद मुर्हूत गांधीनगर में दिया

गांधीनगर- तपागच्छ्य प्रवर समिति के कार्यवाहक पू. गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री अभयदेवसागर सूरीश्वरजी महाराज एवं आचार्य देवेश श्री मोक्षरत्नसागर सूरीजी महाराज - आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों का चार्तुमास चल रहा है। विगत दिनों 40 के लगभग साधु-साध्वी भगवंतों कीनिश्रा में में दिनांक 6 अगस्त को अरिहंत उपासना पर विशिष्ट आयोजन किया गया इसके साथ ही दिनांक 13 अगस्त को लब्धि कलश अनुष्ठान श्री गुरु गौतमस्वामीजी की प्रतिमा के समक्ष हुआ। लब्धि मंत्र का 108 बार विशिष्ट विधान किया गया। लब्धि कलश को भरने का अनुष्ठान किया गया। मुनिश्री योगरत्न श्री जिनरत्न एवं श्री देवार्षिरत्नजी को गणिपद पर प्रतिष्ठित करने के लिये दिनांक 17 अगस्त को मंगल मुहूर्त प्रदान किया गया। श्रावक से श्रमण बनने की संयम साधना करानेवाली आराधना , उपधान का आयोजन प्रथम मुर्हूत दिनांक 25 अक्टूबर तथा द्वितीय मुर्हूत दिनांक 27 अक्टूबर से होने जा रहा है। उपधान तप का मालारोपण का भव्य आयोजन दिनांक14 दिसंबर को होगा। अभय अमृत महोत्सव समिति के द्वारा आयोजित यह तपाराधना सेक्टर-22 गांधीनगर में होगी। उपधान के बाद आपश्री की निश्रा में राघनपुर से श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन दिनांक 29 दिसंबर से होगा। संघ माल दिनांक 3 जनवरी 2024 को होगी।

राष्ट्रसंत श्री चन्द्राननसागरसूरीजी का 63 वां जन्म दिन महामांगलिक के साथ मनाया

मुंबई- राष्ट्रसंत आचार्य देवेश श्री चन्द्राननसागर सूरीश्वरजी महाराजा की महामांगलिक का आयोजन आपश्री के द्वारा संस्थापित तीर्थ श्री नाकोड़ा भैरव दर्शनधाम ठेकाले में दिनांक 17 अगस्त को भव्य आयोजन के साथ सम्पन्न हुई इसी दिन आपश्री का 63 वां जन्मोत्सव का भव्य आयोजन भी किया गया। पूज्यश्री की निश्रा में यहां प्रत्येक रविवार को श्री नाकोड़ा पार्श्व भैरव महाहवन-पूजन का आयोजन भी हो रहा है। पूज्यश्री की निश्रा में श्री पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व की आराधना 12 से 19 सितंबर तक आयोजित होगी। आराधना करने वालों का निमंत्रण दिया गया है।यहां उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। प्रथम मुर्हूत दिनांक 29 अक्टूबर तथा द्वितीय मुर्हूत दिनांक 31 अक्टूबर को है। तपस्वियों का वरघोड़ा 16 दिसंबर को निकलेगा तथा माल दिनांक 17 दिसंबर को होगी।

18 गच्छनायक की वंदना

चैन्नई- श्री वेपरी श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ में पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री विज्ञानप्रभसूरीजी महाराजा की अमृत निश्रा में 22 अगस्त को विभिन्न समुदाय के 18 गच्छनायक गुरु भगवंतों की वंदना का कार्यक्रम आयोजित किया गया। सराहनीय कार्यक्रम में बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों की उपस्थिति रही।

86 वीं वर्धमान तप की ओलीजी का पारणा सम्पन्न

इन्दौर- प.पू.साध्वीवर्या पुण्यप्रभा श्रीजी म.सा. (माँ म.सा.) के दिव्य आर्शीवाद से प.पू.साध्वी वर्या पुण्योदया श्रीजी म.सा. (बहन म.सा.) की शिष्या प.पू.साध्वीवर्या हेमप्रज्ञा श्रीजी म.सा. (बहन म.सा.) के 86 वीं वर्धमान तप की ओलीजी का पारणा सम्पन्न हुआ। वह सकल श्रीसंघ के साथ विशाल वरघोड़े के रुप में साधु साध्वीजी के साथ साथ सकल श्रीसंघ के साथ वरघोड़े बागवाला के निवास पर पहुंचा जहां व्याख्यान मांगलिक व पारणा एवं नवकारसी का कार्यक्रम विशाल समूह के रुप में सम्पन्न हुआ। प.पू.गणिवर्य श्री आनंदचंद्रसागरजी म.सा. आदि 21 साधु-साध्वीजी भगवंतों की निश्रा में 5 अगस्त को रेसकोर्स रोड़ उपाश्रय से प्रातः 7 बजे गाजे बाजे के साथ वरघोड़ा प्रारंभ होकर पार्क व्यू नेहरु पार्क पर पहुंचा जहां मांगलिक प्रवचन व पारणा एवं नवकारसी आनन्द व उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

2800 वर्ष प्राचीन जिनालय की अनुमोदना में अट्ठम तप

मुंबई- श्री ठाकुरद्वार में श्री शांतिनाथ जैन संघ में श्री पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा के 2800 सौ वर्ष पूर्ण होने पर सामुहिक अट्ठम तपाराधना का आयोजन किया गया। पूज्य प्रवर्तक पद्मयशसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में आयोजिन त्रिदिवसीय महोत्सव के अंतर्गत 1008 पुष्प से पूजन, 108 नैवेद्य पूजन-आरती तथा शक्रस्तव अभिषेक का आयोजन किया गया।

हमारे तीज-त्यौहार

1- भादवा वद-6	मंगलवार	5-9-2023	पन्द्रह का घर
2- भादवा वद-8	गुरुवार	7-9-2023	रोहिणी
3- भादवा वद-13(प्रथम)	मंगलवार	12-9-2023	महापर्व पर्युषण आरंभ (अट्ठाई तप)
4- भादवा वद-30	शुक्रवार	15-9-2023	कल्पधा-कल्पसूत्र वाचन आरंभ
5- भादवा सुदी-1	शनिवार	16-9-2023	जन्म वांचन 14 स्वप्न दर्शन, अष्ट मंगल दर्शन
6- भादवा सुदी-2	रविवार	17-9-2023	तेलाघर गणधर वाद
7- भादवा सुदी-4	मंगलवार	19-9-2023	संवत्सरी महापर्व-बारसा सूत्र वाचन, क्षमापना दिन
8- भादवा सुदी-11	सोमवार	25-9-2023	जगतगुरु श्री हीरसूरीजी स्वर्गारोहण दिन (वि.सं. 1652)

पुष्प नक्षत्र :- **आरम्भः-**भादवा वदी-11, रविवार, दिनांक 10-9-2023, समय-17.06 बजे से
समाप्तः- भादवा वदी-12, सोमवार, दिनांक 11-9-2023, समय-20.01 बजे तक

पंचक :- **आरम्भः-**भादवा वदी-12,मंगलवार, दिनांक 26-9-2023, समय-20.19 बजे से
समाप्तः- आसोज वदी-1, शनिवार, दिनांक 30-9-2023, समय-21.09 बजे तक

आया है पर्व पर्युषण
पापों का करना है अवलोकन
हुई जो गलतियां हमसे अपार
गुरु भगवंतों के चरणों में
करते समर्पण।

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

कद बढ़ा नहीं करते एड़ियां उठाने से !
उंचाईयां तो मिलती है सर झुकाने से !!

सादर आमंत्रण

✻ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✻ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✻ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✻ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

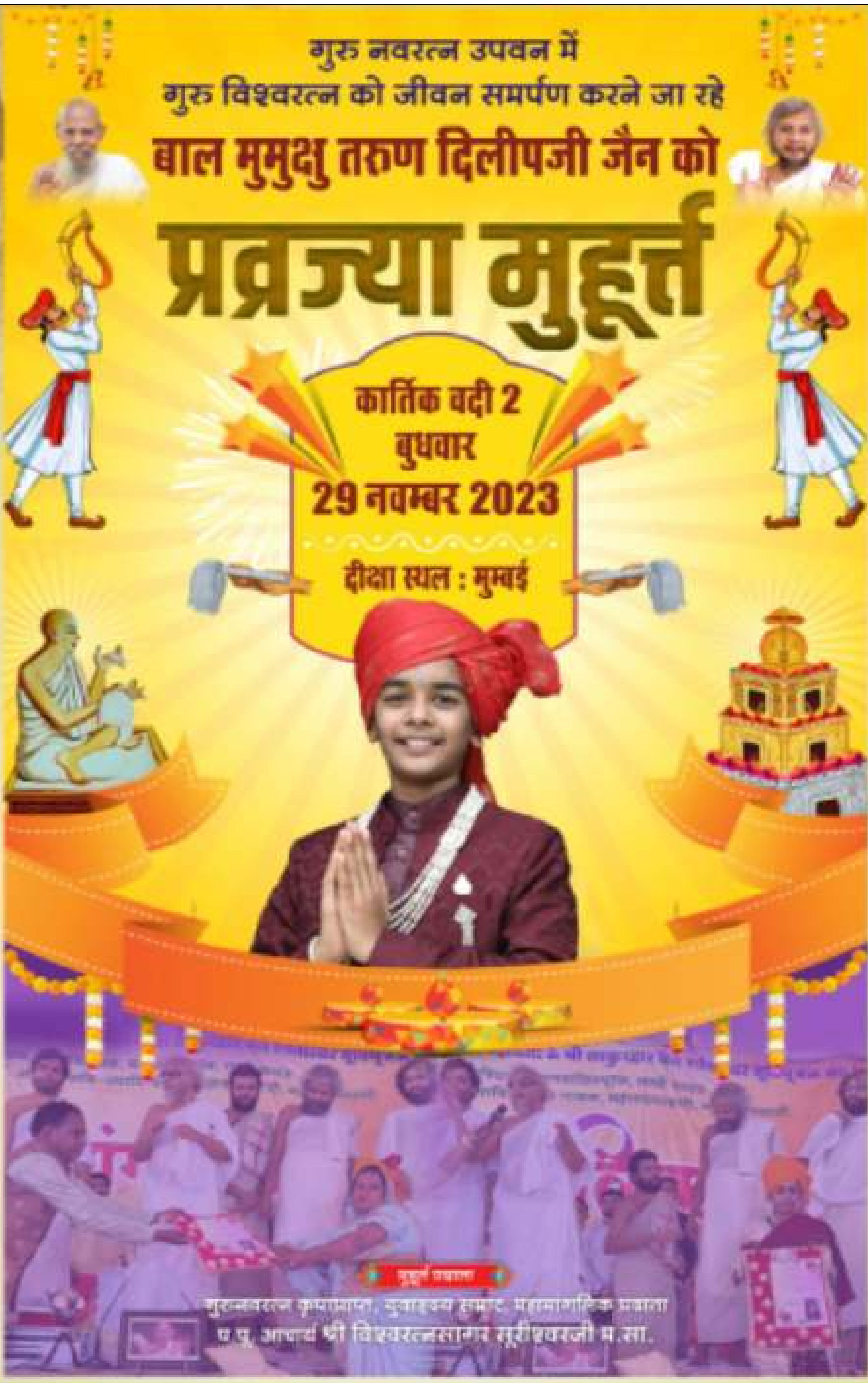

वर्ष 28 | भादवा | सितम्बर-2023 | अंक 9 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें-

डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

प्रति, बुक पोस्ट

श्रीमान् ....

....

....

स्टाम्प टिकिट

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन – संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897